

ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -18

अंक - 5

जून- I, 2017



पाक्षिक

माउण्ट आबू

रु. 8.00

‘सिंधी समाज’ द्वारा सम्मानित ‘दादी’

लोगों की सेवा में जीवन लगाना ही सबसे बड़ा सम्मान : दादी

ब्रह्माकुमारी संस्था की मुख्य प्रशासिका 102वर्षीय राजयोगिनी दादी जानकी का आबू रोड के सिंधी समाज ने किया सम्मान ।

शांतिवन। संस्था के शांतिवन में आयोजित समारोह में पूज्य सिंधी पंचायत के अध्यक्ष रहंदामल, सचिव मोहन सी ज्ञामनानी समेत कई वरिष्ठ पदाधिकारियों ने दादी को प्रशस्ति पत्र भेंटकर सम्मानित किया ।

इस अवसर पर दादी जानकी ने कहा कि यदि मनुष्य का पूरा जीवन लोगों के कल्याण में लग जाये तो इससे बड़ा सम्मान कुछ नहीं हो सकता है। हम सभी को यही प्रयास करना चाहिए कि हमारा जीवन दूसरों की भलाई में लगे। इससे बड़ा पुण्य और सुख कुछ नहीं हो सकता है, क्योंकि जो दूसरों की मदद करता है उसकी मदद परमात्मा स्वयं करता है। इसलिए ही आज ब्रह्माकुमारी संस्था पूरे विश्व में फैल चुकी



समारोह के दौरान दादी जानकी को प्रशस्ति पत्र भेंटकर सम्मानित करते हुए पूज्य सिंधी पंचायत के अध्यक्ष रहंदामल जी, सचिव मोहन सी ज्ञामनानी तथा अन्य वरिष्ठ पदाधिकारीगण ।

है। उन्होंने कहा कि पूज्य सिंधी पंचायत ने हमें सम्मानित किया, यह परमात्मा का सम्मान है। आम लोगों का सम्मान है। इससे निश्चित तौर पर समाज में एक अच्छा संदेश जायेगा। इसके लिए मैं सिंधी पंचायत की आभारी हूँ। कार्यक्रम में पूज्य

सिंधी पंचायत के अध्यक्ष रामचन्द्र रहंदामल ने कहा कि यह हमारे लिए गौरव की बात है कि आबू रोड में एक अंतर्राष्ट्रीय संस्थान है, जिसकी मुखिया राजयोगिनी दादी जानकी जी हैं, जो सिंधी समाज की शान हैं। इनके सानिध्य में पूरे

विश्व के लोगों में मूल्यों का संचार हो रहा है। संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी ने कहा कि हम सब एक परमात्मा के बच्चे आपस में भाई बहनें हैं। इसलिए हमें मिलकर एक अच्छा समाज बनाना है।

इस अवसर पर शांतिवन के मुख्य अभियंता ब्र.कु. भरत ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया तथा उन्हें हर सम्भव सहयोग का आश्वासन दिया। कार्यक्रम में ब्र.कु. चन्दा, ब्र.कु. भानू, ब्र.कु. अमरदीप समेत कई लोग उपस्थित थे।

युनाइटेड नेशन के साथ-साथ युनाइटेड नेचर जरूरी

स्वयं के लाभ से पहले दूसरों के लाभ की सोचना ही दुआएं कमाना है - शिवानी

ओ.आर.सी.-गुरुग्राम। ब्रह्माकुमारीज के ओम शांति रिट्रीट सेंटर में बहुराष्ट्रीय कम्पनीज के निदेशक, चेयरमैन एवं वरिष्ठ अधिकारियों के लिए ‘इग्नाइटींग इनर रिसिलेन्स’ विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विभिन्न कम्पनीज के 150 से भी अधिक लोगों ने शिरकत की।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए ओ.आर.सी. निदेशिका ब्र.कु. आशा ने कहा कि युनाइटेड नेशन के साथ-साथ जब युनाइटेड नेचर होगी, तभी विश्व में सद्भाव एवं शांति का वातावरण बनेगा। उन्होंने कहा कि योग ही ऐसा माध्यम है, जिससे जीवन में समरसता आ सकती है। योग से मन सकारात्मक एवं शक्तिशाली बनता है। योग कोई शारीरिक आसन व प्राणायाम नहीं है, बल्कि मन के द्वारा परमसत्ता परमात्मा से संवाद स्थापित करना ही योग है।

इस अवसर पर विशेष रूप से मोटिवेशनल स्पीकर ब्र.कु. शिवानी ने कहा कि हमारे विचार जितने शक्तिशाली



कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. बृजमोहन, ब्र.कु. आशा तथा ब्र.कु. शिवानी। सभा में ध्यानपूर्वक सुनते हुए विभिन्न कम्पनीज के गणमान्य लोग।

होंगे, सफलता उतनी ही सहज प्राप्त होगी। विचार एक बीज की तरह है, जैसा बीज होगा, वृक्ष भी वैसा ही होगा। उन्होंने कहा कि सफलता केवल किसी व्यक्तिगत उपलब्धि का नाम नहीं है, बल्कि सबको साथ लेकर चलना ही वास्तव में सच्ची सफलता है।

उन्होंने कहा कि हमारे कारण से अगर कोई दुःखी होता है तो हम भी खुश नहीं रह सकते। जब हम दूसरों पर गुस्सा करते हैं तो हम उन्हें नकारात्मक ऊर्जा देते हैं, जो फिर हमारे पास ही लौटकर आती है। धन कमाने के साथ-साथ दुआएं कमाना बहुत जरूरी है। दुआएं

ही जीवन में खुशियों का आधार है। स्वयं के लाभ से पहले दूसरे के लाभ के लिए सोचना ही दुआएं कमाना है। ब्रह्माकुमारीज के अतिरिक्त सचिव ब्र.कु. बृजमोहन ने कहा कि अगर हम अपने कार्यक्षेत्र पर सभी से प्यार से काम लेते हैं तो उसका परिणाम अच्छा निकलता

है। उन्होंने कहा कि हम लोगों को बाहर से कंट्रोल करने के बजाए उनके मनों को कंट्रोल करें। जब वो मन से सकारात्मक एवं प्रसन्न होंगे, तभी उनमें कार्य के प्रति भी उमंग-उत्साह पैदा होगा। कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु. विद्यात्री ने किया।

बस, एक आदेश का इंतज़ार...!!

मनुष्य के जीवन में मन का बहुत ही महत्व है, और जब हम मन की बात करते हैं तो उसे दो कैटेगरी में बाँटते हैं। एक है जागृत मन(कॉन्शियस माइंड), दूसरा अर्धजागृत मन(सब कॉन्शियस माइंड)। जागृत अवस्था में जो भी हम रोज़मर्रा के जीवन में कार्य करते हैं, निर्णय लेते हैं, देखते हैं, उन सबको हम जागृत मन कह सकते हैं।

आज हम, अर्धजागृत मन कैसे कार्य करता है, उसकी शक्तियाँ क्या हैं, उसके बारे में जानेंगे। हमारा अर्धजागृत मन अत्यधिक उपजाऊ



- ब्र. कु. गंगाधर

भूमि जैसा है, और जो बीज मिलता है उसे वह उगाता है। बीज आम का हो या बबूल का, ये देखने का काम ज़मीन का नहीं है। वह तो केवल उगाना ही जानती है। सप्ताह में सोमवार से शनिवार तक बबूल की बोहनी करना और रविवार को भगवान के मंदिर में आम की मांग करना, कोई समझदारी नहीं है ना! अपने सर्वोच्च विकास के लिए आवश्यक

सभी साधन और सामग्री हमारे अंदर ही रख दी गई है। कई लोग इन शक्तियों को पहचान लेते हैं, और कुछ आजीवन भी नहीं पहचान पाते। जो लोग इन शक्तियों को पहचान लेते हैं, वे गरीब परिवार में गुजर-बसर करने के बाद भी खूब उन्नति करते हैं। जो इन शक्तियों को पहचान नहीं पाते, वे अमीर परिवार में पलने-बढ़ने के बाद भी ज़िन्दगी में कोई विशेष कार्य नहीं कर पाते या नहीं कर सकते। अपनी प्रगति का आधार, अपने आसपास क्या है, उसपर नहीं है। अपितु हमारे अंदर क्या है, इसपर आधारित है।

परमात्मा ने हमें जब रचा तो बहुत ही अनोखा, और अद्भुत शक्तियों से सुसज्जित करके इस धरा पर भेजा। जिसे हम आत्मा कहते हैं। आत्मा में वो शक्तियाँ दीं जो किसी भी प्राणी में नहीं। जो अभिव्यक्त होना चाहता है, अंतर्मन में रहने वाला एक दिव्य तत्व, सम्पूर्ण रूप से व्यक्त होने की इच्छा रखता है। अपने अज्ञान के कारण उसकी अभिव्यक्ति रुक जाये, यह किसी भी प्रकार से ठीक नहीं है।

भूतकाल चाहे जिस तरह का गुज़रा हो, लेकिन आपके लिए सबसे महत्वपूर्ण है 'आज की आज'। आज के पेट में ही भविष्य का गर्भ आकार लेता है। जब आप कोई विजुअलाइज़ेशन (दृश्यांकन) करते हो, तब भविष्य के गर्भ को 'आज' स्थापित कर रहे होते हो। बाद में उसका भविष्य आकार लेकर ही रहता है।

आज तक विजुअलाइज़ेशन की जो जानकारियाँ आपको दी गई हैं, उसका आपको महत्व समझ में आ गया होगा। संजोगों के सृजन का समर्थन धारी आपका अर्धजागृत मन आपके आदेश की इच्छा रखता है। ये आपके लिए श्रेष्ठतम ज़िन्दगी का सृजन कर सकता है। किंतु आवश्यकता है इसे स्पष्ट आदेश देने की, और इसे आदेश देने की भाषा है 'विजुअलाइज़ेशन'। जब जामवंत ने हनुमान को कहा कि तुम हवा में उड़ सकते हो और सागर पार कर सकते हो, तो जैसे ही उसे यह आदेश मिला, उसमें वह शक्तियाँ जागृत हो गईं और उन शक्तियों के प्रतिफल वह सागर पार कर गया। यह बातें हमने सुनी हुई हैं ना। विजुअलाइज़ेशन अर्थात् आपको जैसे संजोग चाहिए, वैसे ही संजोग चल रहे हों, ऐसा विजुअलाइज़ेशन।

विजुअलाइज़ेशन की तकनीक का उपयोग कहाँ और कब किया जा सकता है?

विजुअलाइज़ेशन की तकनीक का उपयोग करने के लिए आपके पास दो विकल्प हैं - एक तो, समस्या से बाहर निकलने के लिए। दूसरा, सुखी जीवन को और अधिक सुखी बनाने के लिए। आइये इस विषय पर विस्तार से देखें...

समस्याओं से बाहर निकलने के लिए - रोज़ाना ही उठापटक की छोटी-बड़ी दोनों तरह की समस्याएँ आती रहती हैं। इनमें से बाहर निकलने के लिए आप विजुअलाइज़ेशन कर सकते हैं। ये समस्याएँ किस प्रकार की होती हैं यह जान लें, जिससे आपको प्रत्येक का विस्तृत रूप से ध्यान आये।

- ब्लड प्रेशर घटता-बढ़ता रहता है, नॉर्मल नहीं रहता।

- मेरे पति मुझे बात-बात में डाँटने लगते हैं।

- मैं अपने ग्राहक को बराबर समझा नहीं सकता।

- मुझे अच्छे अंक चाहिए, किन्तु पढ़ने में रुचि नहीं है।

- उधारी के रुपये वापस नहीं मिलते।

- मधुमेह(डायबिटीज़) नियंत्रण में नहीं आता।

- शेष पेज 4 पर...

स्वमान में रहो तो कोई अपमान कर नहीं सकता

अभी सभी का मन कहाँ था! मन शान्त है तो बुद्धि क्या सोचे? मैं हमेशा यह अनुभव करती हूँ कि यहाँ है बाबा, यहाँ है मेरा भाग्य। साक्षी होकर के देखने का, पार्ट प्ले करने का भी भाग्य है। हमारा रचता कौन है, कितनी सुन्दर उसकी रचना है। हरेक कहेगा बाबा मेरा, बाबा कहता है तू मेरा। मैं कहूँगी बाबा तू मेरा, अभी यह जो लाइफ है ना, वो सारे कल्प में नहीं मिलेगी। मरना जीना सब जन्मों में होगा, परन्तु अभी यह जो हमारा जीते जी मरना है ना, यह वन्दरफुल है। यहाँ सभी समझदार और सयाने बैठे हैं, इसलिए याद में बैठते और कोई बात याद आ नहीं सकती।

आज तीसरे रविवार का इन्टरनेशनल योग दिवस है, मैं नहीं समझती हूँ मैंने कभी मिस किया हो। कोई भी शहर में होगी, कहाँ भी होगी, प्लेन में भी होगी या कभी एयरपोर्ट पर भी एक घण्टा बैठके भी थर्ड सण्डे का योग किया है। तो आप में से कोई ऐसा है जिसने कभी मिस नहीं किया हो? दूसरी बात, चारों सबजेक्ट में फुल मार्क्स लेनी है।

कौन है जिसको यह फिकर है? यह फिकर माना नियम पर नियमित चलना, जो बाबा ने अमृतवेले से नियम बनाके दिया है, उसपर

चलते चलें। नुमाशाम का और थर्ड सण्डे का जो नियम है यह भी बहुत ज़रूरी है, बहुत अच्छा लगता है। इसे मिस नहीं करना चाहिए। ट्रैफिक कंट्रोल के गीत भी कितने अच्छे हैं। तो सभी ट्रैफिक कंट्रोल के गीत पर योग करने के नियम पर चलते हो? ऐसे छोटे-छोटे नियम, मर्यादाओं पर चलने से हम बाबा को मुँह दिखा सकते हैं। टाइम पर चलना बहुत अच्छा है।

अपने स्वमान में रहने से बहुत अच्छा लगता है। कोई मेरा अपमान नहीं करता है, भले करता भी हो पर फिर भी स्वमान में रहने से बहुत अच्छी तरह से अन्दर में बल मिलता है। बाकी सब नशे से सभी नुकसान, लेकिन यह जो नशा चढ़ा हुआ है इससे बहुत फायदे हैं। अभी यहाँ से परमधाम में जाना है, सुखधाम में आना है। दिन भर में यह कितनी बारी याद रहता है? तो संगम पर हम त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी, तीनों लोकों में यहाँ निमित्त मात्र हैं क्योंकि संगम युग त्याग, तपस्या और सेवा के लिये है। तो देखना है मेरी त्याग वृत्ति, तपस्वी मूर्त है? कदम कदम पर सेवा हो। हमारी पढ़ाई वन्दरफुल है क्योंकि हमारी पढ़ाई में ही कमाई है। बहुत अच्छी अच्छी बातें अभी भी हर रोज़ बाबा मुरली में सिखाता है।

आज एक ने पूछा कि सकाश क्या है? कैसे मिलती है? कैसे देना होता है? सकाश हम बाबा से खँच रहे हैं, विश्व



दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

को दे रहे हैं। हमारे आपसी सम्बन्धों में सकाश की लेन-देन है। संगमयुग पर जो भाई बहनें हैं अभी हम हज़ारों लाखों हो गये हैं। बाबा अव्यक्त होकर के कितनी सेवाएँ कर और करा रहा है, किसकी सकाश काम कर रही है? बाबा की ना! उसी सकाश से बाबा सबको यहाँ खँच करके हाज़िर कर देता है। सकाश एक पॉवर है, लेकिन ज़रा भी कमज़ोरी है, कोई किसी स्वभाव के वश हैं, तो सकाश ले वा दे नहीं सकते हैं। तो हर एक के स्वभाव को समझना और उसी अनुसार चलना, यह मुश्किल नहीं है, लेकिन थोड़ा मुश्किल लगता है। आजकल और कोई माया नहीं है पर थोड़ा किसी का स्वभाव.. सहन नहीं होता है। इसमें सहनशक्ति, समाने की शक्ति, समेटने की शक्ति आपेही काम करती है। कभी मैंने यह नहीं कहा होगा कि यह मेरे से सहन नहीं होता है। हमारे में इतनी कमज़ोरी नहीं हो।



दादी हृदयमोहिनी
अति. मुख्य प्रशासिका

संगठन में कमज़ोरी वालों को नहीं उमंग वालों को देखो

धार्मिक स्थानों पर दूसरी बात होती है लेकिन यहाँ परिवार और स्कूल दोनों हैं। जब क्लास में होते हैं तो स्कूल लगता

है और जब एक साथ खाते पीते हैं तो घर लगता है। यहाँ दोनों भासना आती है। भगवान सहज बाप के रूप में मिल जायेगा, कम बात नहीं है। वह हमें ऐसे मिला है जैसे हमारा ही था। बाबा ने हमें इतने बड़े संगठन में चलने की शिक्षा दी है। संगठन में थोड़ा बहुत चलता है लेकिन संगठन अच्छा है। यहाँ जितना ज्ञान योग और धारणाओं पर ध्यान खिचवाया जाता है और कहीं शायद इतना नहीं होता। सदा खुशनुम: रहना है, बातों से नहीं डरना। संगठन में बातें तो आयेंगी लेकिन हमारा ध्यान बाबा और पढ़ाई पर हो तो यह बातें कुछ भी नहीं लगेगी। संस्कारों के मिलन में ऐसा होता है। हमने तो बाबा से छोटेपन में आप जैसी पालना पाई है लेकिन आप तो बड़े भी ऐसी पालना के पात्र हो।

प्रश्न:- दादी जी, हमारे ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन पढ़ाई है। सदा पढ़ाई पर हमारा ध्यान रहे इसके लिए क्या करें?

उत्तर:- जो हमारे चारो सब्जेक्ट हैं उन पर विशेष ध्यान रहे। जब हम शुरू-शुरू में

बाबा का बनते हैं तो बाबा और पढ़ाई पर बहुत ध्यान रहता है, बहुत उमंग-उत्साह रहता है लेकिन धीरे-धीरे माया अपना रूप दिखाती है। पहले नशे में रहते हैं और पेपर के टाइम सोचते हैं क्या होगा, कैसे होगा। अगर हम बाबा की बनाई हुई दिनचर्या पर ध्यान दें तो सब ठीक हो जाता है। अगर हमारी दिनचर्या ठीक है तो हमारे जैसी खुशी और किसी को नहीं होगी। सुबह-सुबह मुरली सुनकर सारा दिन उसका अनुभव करें। मुरली और योग मिस नहीं करो। क्लास में सिर्फ प्रेजेन्ट के लिए नहीं बैठना लेकिन मन से भी प्रेजेन्ट रहना है। संग से अपनी सम्भाल करनी है। हमें भगवान मिला है, यही नशा और खुशी हो।

प्रश्न:- दादी जी, परचिंतन से मुक्त कैसे बनें?

उत्तर:- जब भी समय मिले बीच-बीच में मुरली का मंथन करो। परचिंतन से कोई भी फायदा नहीं और प्राप्ति भी नहीं। संगठन में परचिंतन चल सकता है लेकिन चलना नहीं चाहिए। पढ़ाई पर ध्यान देंगे तो सेफ रहेंगे। सारा दिन सेवा तो करते हैं लेकिन अपनी रीति अपनी प्रोग्रेस के लिए मन और बुद्धि का टाइमटेबल बनाओ। रोज़ सवेरे सोचो आज मुझे नया क्या करना है। आज कर्म और बोल में क्या नवीनता होगी! मन की दिनचर्या स्वयं बनाओ इसमें हल्के नहीं बने। अपनी उन्नति के लिए मन का प्रोग्राम

बनाओ। अपनी कमज़ोरी को जान अपने मन की दिनचर्या बनाओ। मन किसी भी बात में फेल न हो, सब बात में विजयी हो।

प्रश्न:- दादी जी, चलते-चलते ईर्ष्या और रीस उत्पन्न हो जाती है, क्या यह ठीक है?

उत्तर:- संगठन में ईर्ष्या और रीस होगी, लेकिन इससे कोई फायदा नहीं और ही नुकसान है। ईर्ष्या की आदत पड़ गई तो निकलने में समय लगता है। हमारी नज़र बहनों पर नहीं मम्मा बाबा पर जाये। बहनों को देखेंगे तो कमी नज़र आयेगी। हमें संगठन मिला है एक दो के उमंग से आगे बढ़ने के लिए, ईर्ष्या करने के लिए नहीं। अपने ऊपर ध्यान दो मुझे क्या करना है। कमज़ोरी वालों को नहीं देखो, उमंग वालों को देखो।

प्रश्न:- दादी जी, हिसाब-किताब बन रहा है या चुक्त्तू हो रहा है उसकी निशानी क्या होगी?

उत्तर:- अगर चुक्त्तू हो रहा है तो सन्तुष्टता और हल्कापन फील होगा, भारीपन नहीं लगेगा।

प्रश्न:- दादी जी, सेवा का लक्ष्य क्या है?

उत्तर:- सबको बाबा का परिचय देकर बाबा का बनाना, सिर्फ कनेक्शन में लाना नहीं। उनको बाबा का बनाकर उनकी पीठ करनी है, उमंग-उत्साह में लाना है, बीच में छोड़ नहीं देना है।

प्रभु-चिन्तन या पर-चिन्तन?

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

हमारी योग-साधना के पाँच मूल तत्व हैं। एक तो यह है कि हम परमपिता परमात्मा के ईश्वरीय गुणों का मनन, चिन्तन और रसास्वादन करते हैं। दूसरा यह कि हम अपने बारे में भी इसी निष्ठा अथवा निश्चय को धारण करते हैं कि हमारा वास्तविक एवं आदिम स्वरूप पवित्रता, शान्ति तथा प्रेम है। तीसरा यह कि हम स्वयं को एक ज्योति-बिन्दु आत्मा मानते हैं और परमात्मा को भी देह-रहित एक शाश्वत ज्योति-बिन्दु रूप मानते हैं और इस प्रक्रिया अथवा विधि से देह की विस्मृति कर आत्मा के स्वरूप में टिकते हैं। चौथा तत्व यह है कि हम आत्मा के स्वरूप की तथा परमात्मा के स्वरूप एवं गुणों की पुनः पुनः, पुनः पुनः स्मृति में लगे रहते हैं और इस स्मृति को निरन्तर या एक तान बनाते हैं। पाँचवाँ तत्व यह है कि हम इस स्मृति में प्रेम भावना, समर्पणमयता इत्यादि का समावेश करते हुए इसमें स्थिति तथा अनुभूति को प्राप्त करते हैं। इस प्रकार के अभ्यास, पुरुषार्थ या योग से हमारे संस्कारों में परिवर्तन आता है, इसमें पवित्रता, शान्ति आदि का उत्कर्ष होता है



तथा हमारा जीवन आध्यात्मिक महानता को प्राप्त करता है। हमारे इस पुरुषार्थ से हमारे मन का मणका विजयमाला में पिरोने के योग्य हो जाता है। परन्तु बहुत बार देखा गया है कि व्यक्ति, इस पुरुषार्थ को छोड़कर उल्टी माला फेरने लगता है। अथवा, वह घण्टा-आधा घण्टा तो योग रूपी सुल्टी माला फेरता है और उसके बाद दिन-भर उल्टी माला फेरता है। कई बार तो कोई साधक योगाभ्यास के

समय भी उल्टी माला फेरने लगता है। उसका परिणाम भी उल्टा ही होता है।

पर-चिन्तन - उल्टी माला

हम ऊपर योग के पाँच मूल तत्वों का उल्लेख कर आए हैं, अब मान लीजिए कि कोई व्यक्ति किसी मनुष्य-तन-धारी में कोई अवगुण, दुर्गुण या त्रुटि देखता है, उसकी कमी-कमजोरी को देखने के बाद उसके मन में बार-बार उस देहधारी की स्मृति आ जाती है और उसके अवगुण या दुर्गुण की भी याद आती है और उस याद में उसके

देहधारी ही की तो याद है और अपनी स्थिति भी तो दैहिक ही है। चौथा, किसी के दुर्गुणों का पुनः पुनः चिन्तन या दूसरों से उसका वर्णन, अर्थात् उसकी निन्दा भी तो इसमें समाई है। पाँचवा, उसकी निन्दा करते हुए या उसकी त्रुटियों को सोचते हुए मन में उसके प्रति घृणा-भाव, क्रोध या अपमान की भावना भी तो समाई हुई है। अतः यह तो योग-साधना के विरुद्ध ही प्रक्रिया है। इसका स्पष्ट अर्थ तो यह हुआ कि योग या ध्यान से जो लाभ होते हैं, वे सभी लाभ तो

इस प्रक्रिया से होंगे नहीं, बल्कि उनके विपरीत ही अब अनुभव होगा। दूसरे शब्दों में, लाभ की बजाय अब हानियाँ ही होंगी। योग से यदि स्वास्थ्य अच्छा होता है तो अब इस पर-चिन्तन और दोष-दर्शन से स्वास्थ्य बिगड़ेगा ही। योग से यदि मन में शान्ति मिलती है तो इस अवगुण-दृष्टि से अशान्ति ही होगी। योग से यदि देह से न्यारापन और हल्कापन अनुभव होता है तो इससे भारीपन होगा। योग से यदि उड़ती कला प्राप्त होती है,

आत्मा में बल भरता है और पवित्रता आती है तो इस पर-चिन्तन से पतन होगा और गिरती कला होगी तथा आत्मा में कमजोरी आएगी। इसलिए ही कहा गया है कि पर-चिन्तन पतन की जड़ है और आत्म-चिन्तन उन्नति की सीढ़ी है। संगमयुग का महोत्सव पुनः सभी को याद दिलाता है कि प्रभु-चिन्तन करो और पर-चिन्तन छोड़ो। एक परमात्मा ही का चिन्तन है।

प्रति घृणा या द्वेष का भी समावेश होता है और वह उस कटुता अथवा दुर्गुण की अनुभूति या स्थिति में होता है, तब इस प्रक्रिया को आप क्या कहेंगे?

इसमें एक तो परमात्मा के ईश्वरीय गुणों और दूसरा आत्मा के आदि स्वरूप की पवित्रता के चिन्तन की बजाय किसी व्यक्ति के दुर्गुणों ही का तो मनन-चिन्तन है। तीसरा, इसमें ज्योति-बिन्दु आत्मा और अशरीरी परमात्मा की स्मृति की बजाय



अहमदनगर-महा.। श्री एम. वेंकट नायडू, मिनिस्टर फॉर अर्बन डेवलपमेंट, इनफोर्मेशन एंड ब्रॉडकास्टिंग को ईश्वरीय साहित्य भेंट करते हुए ब्र.कु. डॉ. दीपक हरके।



दिल्ली-पाण्डव भवन। 'ट्रान्सफॉर्मिंग स्ट्रेस इन्टू हैपीनेस' विषयक कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए सुप्रीम कोर्ट ऑफ इंडिया के न्यायमूर्ति पी.सी. घोष। साथ हैं ब्र.कु. एम.वी. रमेश, ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. बृजमोहन, ब्र.कु. पुष्पा तथा ब्र.कु. लता।



कटक-ओडिशा। बद्रीनारायण पात्र, ग्रामीण विकास मंत्री, ओडिशा को माउण्ट आबू ग्राम विकास प्रभाग के सम्मेलन में आने के लिए आमंत्रित करते हुए ब्र.कु. सुलोचना।



उदयपुर-राज.। 'बुमेन अवॉर्ड फंक्शन शक्ति 2017' के कार्यक्रम में 'उदयपुर टुडे' पुस्तिका का विमोचन करते हुए अवॉर्ड फंक्शन के एम.डी. प्रवीण रातलिया, फिल्म अभिनेत्री मुग्धा गोडसे, अरावली नर्सिंग इंस्टीट्यूट डायरेक्टर सुशीला अग्रवाल तथा ब्र.कु. रीता।



दिल्ली-लॉरेन्स रोड। 'राजयोग फेस्टिवल फॉर हेल्थ वेल्थ एंड हैपीनेस' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए विधायक राजेश गुप्ता, ब्र.कु. लक्ष्मी, ब्र.कु. शुक्ला, ब्र.कु. आशा तथा ब्र.कु. पूनम।



भरतपुर-राज.। सेवाकेन्द्र में आने पर स्वामी डॉ. कौशल किशोर महाराज, पीठाधीश्वर को सेवाकेन्द्र का अवलोकन करवाने के पश्चात् उन्हें ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कविता। साथ हैं ब्र.कु. संतोष, ब्र.कु. जयंत सिंह, ब्र.कु. सुदेश भारद्वाज तथा ब्र.कु. पावन।

आवश्यक सूचनाएँ

राखी का त्योहार हम सभी बड़े धूमधाम से मनाते हैं। परमात्मा द्वारा बांधी गई पवित्रता की राखी से हर मानव अपने आपको सुरक्षित एवं शक्तिशाली अनुभव करता है। उसी संदर्भ में आप सबके लिए खुशखबरी है कि सर्व सेंटर के लिए शिव बाबा की राखी ऑडियो-वीडियो विभाग



(काउंटर) पर उपलब्ध है। लगभग दो सौ वैरायटी की अलग-अलग राखियाँ उपलब्ध हैं। अधिक जानकारी के लिए मधुवन में ऑडियो-वीडियो विभाग (काउंटर) पर संपर्क करें। ई.मेल - audiovisual@bkivv.org वेब - www.omshantimusic.net

एस.एल.एम. ग्लोबल नर्सिंग कॉलेज/ ग्लोबल हॉस्पिटल स्कूल ऑफ नर्सिंग के लिए दो बी.के. मेल होस्टल वार्डन की अतिशीघ्र आवश्यकता है।

योग्यता - मान्यता प्राप्त युनिवर्सिटी से ग्रेजुएट

कार्यानुभव - कम से कम तीन वर्ष का किसी कॉलेज में वार्डन के रूप में

उम्र : 30-45 वर्ष

संपर्क करें...

एस.एल.एम. ग्लोबल नर्सिंग कॉलेज/ ग्लोबल

हॉस्पिटल स्कूल ऑफ नर्सिंग, शिवमणि होम के पास, तलहटी, आबू रोड।

मो. - 8432403244/ 9414143717

ई. मेल - nntagrwal@gmail.com

शांतिवन के ओमशान्ति मीडिया कार्यालय के लिए दो सेवाधारी भाइयों की आवश्यकता है, जो हिन्दी या

अंग्रेजी टाइपिंग जानता हो और कम्प्यूटर की बेसिक नॉलेज भी हो।

लौकिक में पत्रकारिता का अनुभव हो

साथ ही लेखन में रुचि हो। संपर्क करें....मो. - 7014986494

ई.मेल - gangadhar@bkivv.org

एस.एल.एम. ग्लोबल नर्सिंग कॉलेज में दो बी.एस.सी. नर्सिंग ग्रेजुएट्स तथा दो एम.एस.सी. नर्सिंग ग्रेजुएट्स मेल/फीमेल की अतिशीघ्र आवश्यकता है।

विशेषज्ञता - ओ.बी.जी. व कम्प्युनिटी नर्सिंग।

कार्यानुभव - कम से कम एक वर्ष।

संपर्क करें - एस.एल.एम. ग्लोबल नर्सिंग

कॉलेज, शिवमणि होम के पास, तलहटी, आबू रोड।

मो. - 9875197194

ई. मेल - slmgnc.raj@gmail.com



शांतिवन। 'ब्रेल बुक फॉर ब्लाइंड' आध्यात्मिक पाठ्यक्रम बुक का विमोचन करते हुए दादी जानकी, दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. सूर्यमणि, ब्र.कु. स्वाती, ब्र.कु. कमल तथा अन्य।



गंगोह-सहारनपुर(उ.प्र.)। विधायक प्रदीप चौधरी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. संतोष।



व्यावर-डिग्गी मोहल्ला(राज.)। त्रिमूर्ति शिव जयंती के कार्यक्रम में तहसीलदार योगेश अग्रवाल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. गंगा तथा ब्र.कु. विमला।



पटना सिटी-गाय घाट। रामनवमी के अवसर पर निकाली गई प्रभात फेरी में ब्र.कु. रानी तथा ब्र.कु. भाई बहनें।



पोखरा-नेपाल। भवन शिलान्यास कार्यक्रम में पाटन उच्च अदालत की माननीय न्यायाधीश शांति थापा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. परणीता। साथ हैं ब्र.कु. शोभा।



आगरा-सिकन्दरा से.7। एल.आई.सी. कार्यालय में 'तनावमुक्त' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में एल.आई.सी. ग्रुप के अधिकारियों के साथ ब्र.कु. सरिता तथा ब्र.कु. गीता।

कहीं गुस्से के क्रियेटर हम खुद ही तो नहीं

गतांक से आगे...

प्रश्न:- उस समय हम यही कहते हैं कि हमने गुस्से में कह दिया। हमने तो ऐसा सोचा भी नहीं था।

उत्तर:- यह कोई भी विश्वास नहीं करेगा कि मैंने उस समय गुस्से में बोल दिया था। वास्तव में बात यह होती है कि उनका कनवर्टर काम करना बंद कर देता है, फिर वो सारा कुछ बाहर निकल आता है जो हमारे मन में होता है। जब हम किसी को कहते हैं कि मैं वास्तव में ये फील नहीं कर रहा था मैंने तो गलती से बोल दिया। उनको खुद ही नहीं पता होता है कि हम दूसरे के बारे में सारा दिन क्या-क्या सोचते रहते हैं। वो जब इस तरह से बाहर निकल आता है तब हमें बहुत आश्चर्य होता है कि ये हमने क्या बोल दिया। और फिर हम कहते हैं कि आप मेरा विश्वास करो यह सच नहीं है। फिर मुझे शॉक लगता है कि मैं इनके बारे में तो ऐसा बिल्कुल भी नहीं सोचती थी, फिर मैंने उनके बारे में ऐसा कैसे बोल दिया। फिर मैं कहती हूँ कि प्लीज़ आप उस बात को भूल जाओ, मेरा वो मतलब नहीं था।

वो रिश्ता पाँच मिनट के गुस्से से बनता और बिगड़ता नहीं है। रिश्ता ये जो मेरी कलेक्शन ऑफ थॉट है एक-एक के प्रति उस पर बनता है। मान लो कि मैं एक बॉस हूँ और अपने कमरे में बैठकर हरेक के बारे में मैं ये सोचता रहूँ कि पता नहीं ऑफिस में लोग काम कर रहे हैं या नहीं कर रहे हैं, कैसे कर रहे हैं, ये तो बहुत धीरे करते हैं इनसे तो कुछ हो ही नहीं सकता।

प्रश्न:- यह सच है कि वो हम कॉन्शियसली क्रियेट नहीं कर रहे होते हैं।

उत्तर:- हमें इसकी जानकारी होनी चाहिए कि मैं क्या सोच रहा हूँ। क्योंकि यह हमारे जीवन के लिए, रिश्ते के लिए, वर्क कल्चर के लिए और मेरे परिवार के कल्चर के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि यह हमारी एक-एक थॉट पर निर्भर करता है। हमें अपनी थॉट का पता तब चलता है जब वह बाहर निकलता है। हम अपने सम्बंध शब्दों पर नहीं बनाते हैं बल्कि मुझसे जो एनर्जी निकलती है यह उस पर निर्भर करता है।

प्रश्न:- हमें इसके लिए बहुत ही सावधान रहने की आवश्यकता है। प्यार और विश्वास अंदर से शुरू होता है कि मैं सबके लिए क्या सोच रही हूँ।

उत्तर:- यदि हम विश्वास और सम्मान के आधार पर काम करेंगे तो गुस्सा कभी आयेगा ही नहीं।

प्रश्न:- कई बार क्या होता है कि हम अंदर से सोच रहे होते हैं कि वो गलत कर रहा है और हम उस समय कहना नहीं चाहते हैं क्योंकि महौल खराब हो जायेगा। क्या हमें वो सोचना चाहिए कि वो ठीक कर रहा है?

उत्तर:- अगर आप इस तरह से सोचोगे कि वो अपने ढंग से ठीक ही कर रहा है। अगर आप जाकर उसको कुछ कह भी दोगे ना तो उसको खराब नहीं लगेगा। यह बोलने की चीज़ ही नहीं है कि 'मैं आप पर विश्वास करता हूँ' लेकिन हमें अपने अंदर से विश्वास होना चाहिए कि आप जो कर रहे हैं, सही कर रहे हैं। यदि मैं यह कह दूँ कि आपने आज सारा जो काम किया उसमें ये-ये गलतियाँ हैं लेकिन फिर भी मैं आप पर विश्वास करता हूँ कि आपने अपनी समझ के अनुसार ठीक ही किया है। अब यहाँ पर दो भिन्न बातें हो गयीं, एक है कि मैंने आप पर विश्वास किया और अपना समर्थन दिया, लेकिन वास्तव में सारी गलतियाँ हो गयी हैं। आप इसका बुरा नहीं मानेंगे और बहुत ही संयम और आत्मविश्वास से कहेंगे कि हाँ सर, मुझसे गलती हो गई है, अगली बार मैं इसका ध्यान रखूँगा। इस बात से हमारे संबंधों पर कहीं पर भी कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। - क्रमशः



ब्र.कु. शिवानी

स्वास्थ्य

चूना अमृत है...

अनेक बीमारियों में लाभदायक चूना

● चूना एक टुकड़ा छोटे से मिट्टी के बर्तन में डालकर पानी से भर दें, चूना गलकर नीचे और पानी ऊपर होगा!

वही एक चम्मच पानी किसी भी खाने की वस्तु के साथ लेना है। 50 के उम्र के बाद कोई कैल्शियम की दवा शरीर में जल्दी नहीं घुलती, जबकि चूना तुरन्त घुल व पच जाता है।

● किसी को पीलिया (जॉन्डिस) हो जाये तो उसकी सबसे अच्छी दवा है चूना; गेहूँ के दाने के बराबर चूना गन्ने के रस में मिलाकर पिलाने से बहुत जल्दी पीलिया ठीक हो जाता है।

● बच्चों के लिए चूना बहुत अच्छा है जो लम्बाई बढ़ाता है। गेहूँ के दाने के बराबर चूना रोज़ दही में मिला के खाना चाहिए, दही नहीं है तो दाल में मिला के खाओ, दाल नहीं है तो पानी में मिला के पियो, इससे लम्बाई बढ़ने के साथ स्मरण शक्ति भी बहुत अच्छी होती है।

● जिन बच्चों की बुद्धि कम काम करती है, मतिमंद बच्चे, उनकी सबसे अच्छी दवा है चूना। जो बच्चे बुद्धि से कम हैं, दिमाग देर से काम करता है, देर से सोचते हैं, हर चीज़ उनकी स्लो है, उन सभी बच्चों को चूना खिलाने से उनके ठीक होने की संभावना काफी बढ़ जाती है।

● माताओं बहनों या किसी को भी गेहूँ के दाने के बराबर चूना हर दिन दाल में, लस्सी में, नहीं तो पानी में घोल के पीना चाहिए। चूना कैल्शियम का सबसे बड़ा भंडार है। चूना घुटने का दर्द ठीक करता है, कमर का दर्द ठीक करता है, कंधे का दर्द ठीक करता है।



● एक खतरनाक बीमारी है Spondylitis वो चूने से ठीक होता है।

● कई बार हमारी रीढ़ की हड्डी में जो मनके होते हैं, उसमें दूरी बढ़ जाती है, Gap आ जाता है, उसको ये चूना ही ठीक करता है। रीढ़ की हड्डी की सब बीमारियाँ चूने से ठीक होती हैं। अगर आपकी हड्डी टूट जाये तो टूटी हुई हड्डी को जोड़ने की ताकत सबसे ज्यादा चूने में है। चूना खाइए सुबह खाली पेट।

● मुँह में ठंडा गरम पानी लगता है तो चूना खाओ, बिल्कुल ठीक हो जाता है।

● मुँह में अगर छाले हो गए हैं तो चूने का पानी पियो, तुरन्त ठीक हो जाता है।

● शरीर में जब खून कम हो जाये तो चूना ज़रूर लेना चाहिए, एनीमिया है, खून की कमी है, तो उसकी सबसे अच्छी दवा है ये चूना, चूना पीते रहो गन्ने के रस में, या संतरे के रस में, नहीं तो सबसे अच्छा है अनार के रस में। अनार के रस में चूना पिएं, खून बहुत बढ़ता है, बहुत जल्दी खून बनता है - एक कप अनार का रस और गेहूँ के दाने के बराबर चूना सुबह खाली पेट।

● घुटने में घिसाव आ गया और डॉक्टर कहे कि घुटना बदल दो, तो भी ज़रूरत नहीं। चूना खाते रहिये और हरश्रृंगार के पत्ते का काढ़ा पीजिए, घुटने बहुत अच्छे काम करेंगे।

बस, एक आदेश का इंतज़ार... - पेज 2 का शेष

- बेचैनी, गैस, एसिडिटी की तकलीफ रहती है।

- स्टाफ के लोगों का सहयोग नहीं मिलता।

- पैसों की हमेशा तंगी रहती है।

- पिताजी क्यों नहीं समझते आदि आदि।

इसके अलावा भी दैनिक जीवन में जो समस्याएँ आपके ज्ञान में आती हैं, उसके निराकरण के लिए विजुअलाइज़ेशन किया जा सकता

है। कई लोगों को सुखी बनाने में आप भी निमित्त बन सकते हैं। आपमें अधिक सुखी बनने की सभी संभावनायें विद्यमान हैं।

विजुअलाइज़ेशन इन संभावनाओं को उजागर कर, बाहर लाकर अपना लक्ष्य पूर्ण करने में या प्राप्त करने में आपके लिए बहुत उपयोगी रहेगी।

पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

हमारा मन बहुत ही नाजुक सा है, जैसे ही आप उसे कुछ भारी देंगे, जिसमें कुछ सोचना है, तो वो उसे छोड़ता ही चला जाएगा। देखो, सभी चाहते हैं कि दुनिया में मेरा नाम हो, दुनिया में सब मुझे पहचानें। लेकिन नाम और पहचान के लिए मन को सही दिशा में लगाना तो पड़ेगा ना, और लगाने के लिए मन को एकाग्र करना अति आवश्यक है।

मन नहीं करेगा कुछ नया करने का। हर वो चीज जो इंसानों की समझ से परे है, उसे इस दुनिया में लोग कारण और प्रभाव के नाम से जानते हैं या कॉज़ एंड इफेक्ट कहते हैं। आजकल विज्ञान भी इसकी पैरवी करता है, विज्ञान कहता है कि इस दुनिया में चमत्कार जैसी कोई भी चीज अस्तित्व



जब वो घटती है तो पता नहीं चलता, लेकिन धीरे-धीरे जब वो बड़ा रूप लेती है तो बहुत कुछ बीत चुका होता है। अब आपको समझ में आ जाना चाहिए कि हमारी दिनचर्या अथवा जीवन में जो कुछ भी अच्छा या बुरा हो रहा है वो कारण और उसके प्रभाव के आधार से ही है। हम सभी तीन स्तर पर काम कर रहे हैं, प्रथम भौतिक स्तर, दूसरा कोशिका उत्तक अर्थात् फीज़ियोलॉजिकल लेवल, तीसरा स्तर है मनोवैज्ञानिक पहलू। हम दो स्तर को तो देखते हैं, लेकिन तीसरा स्तर जो मनोवैज्ञानिक पहलू है, घटनायें उसी स्तर से घट रही हैं। हमारा मन हमारे वश में नहीं है आज, उसमें कभी भी कुछ भी चले, चाहे खाना खाने का विचार हो, चाहे सोने का विचार, चाहे

अब देखिये, आप अपने विचारों के लिए कुछ नया नहीं करेंगे, उसे कुछ नहीं देंगे तो मन तो भागेगा, और वो पता है कहाँ जायेगा, सिर्फ और सिर्फ आकर्षण की तरफ। जहाँ पर व्यक्ति आबाद नहीं बर्बाद होता है। इस दुनिया में इच्छा से बड़ी कोई भी रचनात्मक शक्ति नहीं है, लेकिन रचनात्मकता लाना सबके वश की बात नहीं है। कारण सीधा और साफ है कि यदि हमारे जीवन में हम लक्ष्य विहीन हैं तो हमारा

में नहीं है। सबकुछ कारण और उसका प्रभाव है। हर विचार एक कारण है और उसका प्रभाव हमारे शरीर पर दिखाई देता है। आज हमारी सोच इतनी छोटी है कि हम परमात्मा तक को भी उस छोटी सोच में, उस छोटे दायरे में फिट करने की कोशिश करते हैं जो कि असंभव है। जीवन की हर घटना जब घटती है तो वो एक डॉट अर्थात् छोटी सी एक बिन्दु समान होती है।

प्रभाव हमारे मन के दायरे को छूता है। आप सोचिये ज़रा, मन हर समय कुछ न कुछ दूँढ़ रहा है, कुछ न कुछ सोचना चाहता है, तो क्यों न हम कुछ रचनात्मक सोचें, जिसमें अपना भला हो, समाज का भला हो, दूसरों का भला हो, विश्व का भला हो। अगर हम ऐसा सोचना शुरू करेंगे तो दूसरों का कल्याण तो बाद में होगा, पहले तो अपना कल्याण शुरू हो जाएगा।



बुटवल-नेपाल। नेपाल के उपप्रधान एवं गृहमंत्री माननीय कमल थापा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. नारायण।



नई दिल्ली-आर.के.पुरम। 'खुशी या तनाव, स्वयं करो चुनाव' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में ब्र.कु. उर्मिला, माउण्ट आबू, ए.डी.जी. प्रभाकर सिंह, मिनिस्ट्री ऑफ अर्बन डेवलपमेंट, सोमदत्त डांगी, ब्र.कु. अनिता, ब्र.कु. ज्योति, ब्र.कु. मनीषा तथा ब्र.कु. कुसुम।



कुत्र-ओडिशा। नवनिर्मित भवन 'प्रभु उपहार' का उद्घाटन करते हुए इंदौर ज़ोन की क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु. कमला दीदी।



कटक-ओडिशा। 19 ग्राम पंचायतों से आए हुए सरपंच एवं समिति सभ्य को शिव संदेश देने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. सुलोचना, पंचायत समिति की अध्यक्ष स्वप्न सरिता तथा अन्य।



दिगावा मण्डी-हरियाणा। डायबिटीज़ पीड़ितों के लिए स्वास्थ्य शिक्षा शिविर 'मधुर मधुमेह' के अवसर पर महंत केशव नाथ को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शकुन्तला। साथ हैं ब्लॉक समिति के अध्यक्ष नंदलाल मतानी।



चिरकुण्डा-झारखण्ड। भारत विकास परिषद, मैथन शाखा झारखण्ड की ओर से वरिष्ठ नागरिकों के लिए आयोजित 'अध्यात्म एवं सामाजिक दायित्व पालन में राजयोग की भूमिका' विषयक कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. पिकी। मंचासीन हैं ब्र.कु. अनिता, ब्र.कु. ममता, ब्र.कु. समीर तथा अन्य।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-19-2017

1			2		3			4	
			5					6	
			7		8	9			
10	11		12					13	
					14				
15		16		17			18		19
		20							
						21			
		22			23			24	
25				26					

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

- बाप आकर तुम बच्चों को 13. विकारों के कारण ही भगवान.... बनाते हैं (4) तुम्हारी....हुई है, दुर्दशा (3)
- अच्छे-अच्छे बच्चों को माया....कान 14. बाप आये हैं तुम बच्चों को.... बनाने, से पकड़ लेती है (2) पवित्र (3)
-तेरी गली में जीना तेरी गली में (3) 16. अन्त में खूनी....खेल चलना है (3)
- इस पतित दुनिया से तुम्हारी 18. शुद्ध, पाक, पावन (3) सारी....टूट जानी चाहिए, लगाव (2) 19. शरीर की स्थिति, मन की स्थिति, 7. थोड़ा, अल्प, कम (2) मन, स्वास्थ्य (4)
- रोज़ ज्ञान-योग की....खिलाकर 22. अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने अपनी आत्मा को तन्दुरुस्त बनाना है (3) वाला, ज्ञान देने वाला (2)
- अन्त, समाप्ति (4) 23. आशीर्वाद, प्रार्थना, विनती (2)
- स्नेह, प्रेम, लगाव (2)

वायें से दायें

- रास्ता भूलना, इधर-उधर 15. निज, स्वजन, निजका (3) घूमना (4) 17. नया, नवीन, नूतन (2)
- हनुमान, जो....होगा वह झट 18. रावण ने तुम बच्चों संजीवनी बूटी देगे (4) को.... बनाया है (3)
- कटि, शरीर का मध्य भाग 20. कृत्रिम जल मार्ग (3) (3) 21. अतर, खुशबू (2)
- गरम, तपत (2) 24. झुका हुआ, नम्र, विनीत (2)
- अप्रसन्न, नाराज़ (3) 25. अपने फरिश्ता....से बाप का साक्षात्कार कराओ (3)
- बाप ही आकर ज्ञान 26.सबको बाप के पास बच्चे....भोगते आये हो (2) आना ही पड़ेगा, अन्त में (4)
- पवित्र, शुद्ध (3) - ब्र.कु. राजेश, शांतिवन



दिल्ली-हरिनगर। श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के कुलपति प्रो. रमेश कुमार पाण्डे को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. नेहा तथा ब्र.कु. अंकिता। साथ हैं ब्र.कु. एन.के. चौधरी तथा ब्र.कु. देवेन्द्र।



कुरुक्षेत्र-हरियाणा। जिला बार एसोसिएशन में कार्यक्रम के दौरान अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश पूनम सुनेजा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. उषा, माउण्ट आबू। साथ हैं राजयोगिनी ब्र.कु. सरोज।



सिवान-बिहार। चैनपुर में शिवजयंती महोत्सव के अवसर पर 'एक शाम शिव पिता के नाम' कार्यक्रम में मंचासीन हैं विधायक बहन कविता जी, ब्र.कु. सुधा, डी.डी.सी. राजकुमार तथा जे.डी.यू नेता अजय सिंह।



कामेत-इटावा(उ.प्र.)। महाशिवरात्रि पर शिव ध्वजारोहण करते हुए पत्रकार देशधर्म स्वामिनी श्रीमति रेनू भदौरिया, ब्र.कु. ज्योति तथा अन्य।



मैनपुरी-उ.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर सम्मानित होने के पश्चात् सम्मान चिन्ह के साथ महिला एवं बाल संरक्षण अधिकारी डॉ. अल्का मिश्रा, कवयित्री श्री देवी, ब्र.कु. अवन्ती तथा अन्य।



डेरा बस्सी-पंजाब। महाशिवरात्रि पर शहर में शांति यात्रा द्वारा शिव संदेश देते हुए ब्र.कु. भाई बहनें।



पानीपत-हरियाणा। 'बैलेंसिंग लाईफ एण्ड वर्क' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए पानीपत रिफाईनरी के ई.डी. रामगोपाल जी, जिलाध्यक्ष बीजेपी प्रमोद विज, हरियाणा खादी ग्राम उद्योग बोर्ड के अध्यक्ष संजय भाटिया, आई.जी. सुमन मंजरी, डॉ.राजीव, हरियाणा चेम्बर ऑफ कॉमर्स के सेक्रेट्री राकेश गर्ग, ब्र.कु. सरला, ब्र.कु.शिवानी तथा ब्र.कु.भारतभूषण।



गुरुग्राम-सेक्टर-23। नॉर्थ कैम्पस युनिवर्सिटी में 'महिला सशक्तिकरण' कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए युनिवर्सिटी के उपकुलपति डॉ. प्रेम व्रत। साथ हैं डॉ.सी.पी. सुमित कुमार, प्रो. डॉ. सुरेश वर्मा, डॉ. सुजाता शर्मा, ब्र.कु. उर्मिल तथा ब्र.कु. सुदेश।

अति निकटता का...परिणाम

- ब्र.कु. विश्वनाथ

'चलो दोस्त, अपने उस मित्र से मिलने जायें', - एक मित्र ने दूसरे मित्र को कहा। 'लेकिन उसे फोन किये बिना नहीं जाना चाहिए। उसकी अनुकूलता और प्रतिकूलता तो जान लेना चाहिए ना' - दूसरे मित्र ने स्पष्टता की। 'यार जो निकट के हों उनसे क्या मुलाकात का समय लेना!' प्रथम मित्र का प्रत्युत्तर।

मनुष्य को दूसरों के सिर पर पड़ने की कला सीखनी नहीं पड़ती। बहुत सारे अधिकार मनुष्य स्वयं ही भोग लेना स्वीकार कर लेता है। अति सुलभता आपका गौरव कम कर देती है। दुर्लभता कई बार आपका महत्व बढ़ाने की निमित्त बन जाती है।

अतिथि शब्द बहुत प्राचीन समय से प्रचलित है। कार्यक्रम में अतिथि-विशेष जैसा हास्यास्पद शब्द दूसरा कोई नहीं, पत्र लिखकर, फोन कर, जिस तारीख पर हाज़िर रहने के लिए तय कर आने वाले व्यक्ति विशेष को 'अ-तिथि' कैसे कह सकते हैं? हकीकत में तो वे सतिथि हैं। जब प्रत्यापन या वाहन व्यवहार के यांत्रिक साधन नहीं थे, तब मेहमान आकस्मिक रूप से ही पहुँच जाते थे, आने का समय या तिथि के बारे में बिना बताये उसका आगमन होता था। इसलिए अ-तिथि कहते थे।

आज प्रत्यापन या संचार के अनेक साधन होने के बावजूद बहुत लोग कुछ भी बताये बिना ही किसी भी वक्त पहुँच जाते हैं और आपके मूड को बिना परखे अपनी बात उनके ऊपर थोपते रहते हैं। सरलता से उन बातों को लेना, ये उनके लिए अग्नि परीक्षा समान होता है।

बहुत सारे लोगों को काम पड़ने पर निकटता का नाटक करना बखूबी आता है। ऐसे चाटुकार मनुष्यों की भी इस दुनिया में कोई कमी नहीं है। निकटता, ये दूसरी वस्तु है और खुशामद या स्वार्थ खातिर निकटता का प्रदर्शन करना, ये दूसरी बात है।

सूर्य का ही उदाहरण ले लीजिए। उगता सूर्य सबको पसंद आता है। पूज्य लगता है। लेकिन सूर्य आकाश में होने के बावजूद गरमी के दिनों में उनकी निकटता हमें दुखदायक लगती है। वह बादलों से ढका रहे, ऐसी उनकी गैरहाज़िरता हमें पसंद होती है। उससे उल्टा बरसात की ऋतु में सूर्य हाज़िर होकर पूरी तरह से अपने तेजोमय स्वरूप में उपस्थित हो, ऐसी हमारी प्रतिक्षा रहती है। लोग उपयोगिता के पैमाने पर ही मनुष्य की हाज़िरी और गैरहाज़िरी

की इच्छा रखते हैं। मनुष्य थोड़ा उपलब्ध रहे, उससे उल्टा थोड़ा समय अनुपलब्ध रहे तो उनकी मांग बढ़ जाती है। बाज़ार में भी जो वस्तु अधिक मात्रा में सहजता से उपलब्ध होती है तो उसकी मांग कम हो जाती है। लेकिन जब उसी वस्तु की किसी कारणवश किल्लत हो जाती है तो वह महंगी हो जाती है। सामाजिक सम्बन्धों में भी यह बात उतनी ही लागू होती है।

बहुत बार कई लोग निकटता का भ्रम तोड़ने के निमित्त बनते हैं। जिसे हम शेर जैसा मानते हैं उसकी निकटता का अनुभव करने के बाद अपने को लोमड़ी जैसा समझने लगते हैं। काम के समय काम न आये तब आपकी प्रयासपूर्वक बनाई निकटता भी व्यर्थ साबित होती है। सम्बन्ध या जान-पहचान, ये तो अमृत आमवृक्ष की तरह है। उसके फल खाने का उतावलापन स्वाद को बिगाड़ देता है। प्रणय संबंधों या मैत्री टूटने में भी बहुत बार अति निकटता महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

इच्छाओं को तृप्त करने का साधन न बनाइये। फ्रोटो ने संत्रियों और चौकीदारों का उदाहरण देते हुए कहा कि कुछेक संत्रियों की बटालियन को सागर के किनारे निगरानी रखने का काम सौंपा था। उसे दूर से कुछ तैरता हुआ, आगे बढ़ता हुआ दिखाई दिया। इसलिए उसने कहा कि नौका, युद्ध के लिए जहाजी काफिला है। पांच मिनट के बाद उसने देखा तो उसे लगा कि एक बोट तैरते-तैरते आगे बढ़ रही थी, लेकिन कुछ समय के बाद जब वह वस्तु अत्यंत पास में आई तब उसे पता पड़ा कि कुछेक लकड़ियां तैरती-तैरती आगे बढ़ रही थीं। सम्बन्ध में भी ऐसा ही होता है। मनुष्य मोह या आकर्षण के वश होकर व्यक्ति की ओर खींचता जाता है और निकटता का अनुभव होते अति सामान्य लगता है।

अति निकटता के दुष्परिणाम से बचने की तरकीब

1. प्रेम के सम्बन्धों को स्वाभाविक रीति से ही विकसित होने दें, उस पर हावी न हों।



यहाँ राबर्ट ग्री का दिया उदाहरण सटीक बैठता है कि ऊँट के अठारह अंग जिस व्यक्ति ने पहली बार देखा होगा वह व्यक्ति ऊँट को देखकर भाग गया होगा। दूसरा व्यक्ति हिम्मत कर पास गया लेकिन आगे नहीं बढ़ा। लेकिन तीसरा व्यक्ति ऊँट के बिल्कुल पास में गया और गले में डोरी डालकर उसे अपना बना लिया। प्रत्येक घटना को विवेकपूर्ण दृष्टि से देखने के कारण सर्प समान लगती वस्तु भी वरदान समान लगने लगती है।

व्यवहार में मनुष्य प्रेमपूर्वक संबंध परिपक्व होने जितना धैर्य नहीं दिखाता है। प्रेम को पाने के लिए संबंध को 'कल्पवृक्ष' समान मानकर अपनी

2. सम्बन्ध की भी एक आचार संहिता है। उसके लिए अति निकटता नहीं लेकिन समझदारी पूर्वक अंतर भी ज़रूरी है।

3. कोई एक घटना से सम्बन्ध या संबंधियों का मूल्यांकन ना करें।

4. बहुत लोग अवसरवादी होते हैं, ऐसे समयभक्षी मनुष्यों से दूरी रखें।

5. निकटता के कारण दूसरे व्यक्ति के जीवन की स्वतंत्रता को जोखिम में रखने का ख्याल न रखें।

6. स्वयं में स्वयं ही पवित्रता व खुशियों को बनाये रखें, ना कि दूसरों के द्वारा प्राप्त खुशी को आधार बनायें।

कल्याणकारी यज्ञ को बनाएं निर्विघ्न

“यह यज्ञ जादू की नगरी बन जाएगा, जब यहाँ से व्यर्थ सम्पूर्णतया समाप्त हो जाएगा” - ये ईश्वरीय महावाक्य सुनकर ऐसा कौन होगा जो स्वयं से व्यर्थ को समाप्त करने का दृढ़ संकल्प न करे! ये यज्ञ, जो कि रूद्र यज्ञ है, जिसकी स्थापना स्वयं शिव ने अपना ज्ञान डमरू बजाकर की, सभी यज्ञों को अपने में समाहित किए हुए है। स्वयं भगवान ने इस यज्ञ को रचकर इसकी रक्षा की जिम्मेदारी पवित्र ब्राह्मणों को दी और कहा - “ हे राजर्षियों, तुम इस पवित्र यज्ञ से पवित्र ब्रह्मा भोजन खाओ, यह यज्ञ तुम्हारी पालना करे और तुम वृद्धि को पाते रहो, यह यज्ञ तुम्हें मन इच्छित फल प्रदान करे।”

▶ पवित्र ब्राह्मण इस यज्ञ की रक्षा कैसे करें?

क्या बाहुबल या शस्त्र बल से? नहीं, योगबल व पवित्रता के बल से। यह यज्ञ इस कलियुग



को पावन सतयुग में बदलेगा और इससे निकली विनाश ज्वाला कलियुगी दुनिया को व उसमें बसे असुरों को भस्म करेगी। जो ब्राह्मण इसकी रक्षा करेंगे, आनेवाले महाकाल में यह यज्ञ उनकी रक्षा करेगा। यह यज्ञ जो सभी को अतुलनीय सुख प्रदान करता है, जो विश्व में शान्ति की स्थापना करता है, जो अनेकों को विघ्नों से मुक्त करता है, सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त हो रहा है। यह यज्ञ अनेकों को बल प्रदान कर रहा है।

आज तक इस रूद्र यज्ञ में कितने ही पवित्र ब्राह्मणों ने अपना सर्वस्व स्वाहा कर दिया है। यह अलौकिक यज्ञ है, इसमें स्वाहा होने वाली चीजें भी सूक्ष्म हैं। जो व्यक्ति इसमें अपने विकार स्वाहा करते हैं, उन्हें यह यज्ञ स्वर्ण काया, दिव्य बुद्धि व शीतल मन प्रदान करता है। जिन्होंने अपना जीवन ही यज्ञ वृद्धि में लगा दिया, उनके भाग्य के तो कहने ही क्या! वह समय आ रहा है जबकि सम्पूर्ण विश्व ऐसी आत्माओं के चरण-रज अपने मस्तक पर रखकर स्वयं को भाग्यशाली अनुभव करेगा। परन्तु आवश्यकता इस बात की है कि ऐसी आत्माओं को स्वयं के महान मूल्य को अब ही समझ लेना चाहिए। यह ब्राह्मण परिवार भी महान है, जो कि इसी यज्ञ की रचना है। परन्तु स्वार्थ वश या गलत मान्यताओं वश या स्वयं के रहे हुए कुटिल संस्कारों वश कोई ब्राह्मण आत्मा भी इस यज्ञ

में विघ्नकारी बन जाए तो अनेक कठिनाइयाँ सामने आ खड़ी होती हैं। जो यज्ञ पर कुर्बान हुए हैं उन्हें तो कहना चाहिए कि चाहे मेरा अस्तित्व भी क्यों न मिट जाए, चाहे मेरा सर्वस्व लुट जाए, किंतु यज्ञ पर आँच नहीं आनी चाहिए।

▶ यज्ञ में विघ्न कौन से

वैसे तो सर्वशक्तिवान द्वारा रचित इस यज्ञ में भला कौन विघ्न डाल सकता है! वह स्वयं ही इसका रक्षक भी है। किसी भी शूद्र या राक्षस प्रवृत्ति वाले व्यक्ति द्वारा डाले जाने वाले विघ्नों को इस यज्ञ की पवित्र ज्वाला सहज ही नष्ट कर देती है। परन्तु यदि चोर घर में ही हो, यदि उत्पाती अन्दर छुपा हो, यदि विघ्नकारी अपने ही हों तो अवश्य ही कठिनाई होती है, परन्तु विघ्नकर्ता स्वयं ही ऐसा करके अपना पैर कुल्हाड़ी पर दे मारता है। कुछ सूक्ष्म विघ्न इस प्रकार हैं -

▶ वातावरण बिगाड़ना

यह पवित्र यज्ञ सभी को अलौकिक अनुभव

कराने वाला है। अब भी हजारों आत्माएं यहाँ दिव्य-दर्शन करती हैं, परन्तु शीघ्र ही वह समय हम देखेंगे, जब यहाँ आते ही लोग अशरीरी हो जाया करेंगे, यहाँ आते ही उनकी हिंसात्मक वृत्ति बदल जाएगी, परन्तु यह तब होगा जब हम इस वातावरण को व्यर्थ से मुक्त करेंगे। परन्तु यदि कोई व्यक्ति व्यर्थ की गपशप से, इधर की बात उधर सुनाकर, छोटी बातों को बड़ाकर, परचिन्तन व निन्दा चुगली करके इस वातावरण को कमजोर करता है तो वह स्वयं को ही कमजोर करता है, मानो वह भगवान की इच्छाओं को पूर्ण करने में बाधक है, तब भला ऐसे व्यक्ति की क्या गति होगी!

▶ अपवित्रता - सबसे बड़ा विघ्न

इस पवित्र यज्ञ से विनाश ज्वाला प्रज्वलित होगी। यहाँ का पवित्र वातावरण सभी को निर्विकारी बनने की प्रेरणा दे रहा है। यहाँ आकर मनुष्य विकारों को विष अनुभव कर लेता है। पवित्रता तो इसकी जान है। पवित्रता के बल से ही यह यज्ञ विश्व में सर्वाधिक शक्तिशाली है। इस बल के कारण इस यज्ञ को कोई आसुरी शक्ति कुछ भी बिगाड़ नहीं सकती। परन्तु यदि कोई दुर्बुद्धि अपनी वासनाओं व विकारों की अग्नि प्रज्वलित करे तो वह प्रभु-प्रेम का पात्र कभी भी नहीं बन सकता और ऐसी आत्मा को तीनों लोकों में कहीं भी क्षमा नहीं मिल पाएगी। इस पावन यज्ञ

में सबसे बड़ा विघ्न अपवित्रता ही है। परन्तु जो आत्माएं अपनी शक्तिशाली पवित्रता से इसे बल प्रदान करते हैं, वे सर्वश्रेष्ठ भाग्य के अधिकारी होंगे और वे ही ईश्वरीय कार्य में सम्पूर्ण सहयोगी माने जायेंगे।

▶ तेरा को मेरा कहना

प्रायः सभी ब्राह्मण इस स्थिति में रहते हैं कि “हे प्रभु, सब कुछ तेरा”। वे अपना एक एक पैसा यज्ञ प्रति समर्पित करते हैं। वे बड़ी बड़ी यज्ञ शालाएं बनाने में तन, मन, धन का सहयोग देते हैं। परन्तु कोई लोभी या पापी मन वाला व्यक्ति यदि भगवान की सम्पत्ति पर भी - यह मेरा है, मैंने दिया है, मैंने बनाया है, ऐसी भावना रखकर अनेकों के लिए समस्या पैदा करता है तो उसे तो कहां भी स्थान नहीं मिलेगा, अर्थात् उसकी दुर्गति तो निश्चित है।

▶ टकराव - भयंकर विघ्न

भगवान की सेवाओं में हम टकरायें, तो लोग हमें टकराने वाले पत्थर ही कहेंगे। चाहे टकराव किसी भी कारण से हो, अपवित्रता के कारण, ईर्ष्या के कारण, तेरे मेरे के कारण या गलत संस्कार व्यवहार के कारण - ये यज्ञ में भयंकर विघ्न है, यज्ञ को निर्बल करके यज्ञ-वत्सों को उदास करने वाला है। इसलिए जो भी यज्ञ प्रेमी हैं वे स्वयं ही झुककर, कुछ सहन करके, कुछ समाकर व कुछ भुलाकर, यज्ञ को इस विघ्न से मुक्त करते चलें।

जो व्यक्ति अपने टकराव के स्वभाव के कारण यज्ञ की वृद्धि में विघ्न डालते हैं, उन पर भी भारी बोझ चढ़ता है। वे इस सत्य को महसूस करें। हमारा तो जीवन ऐसा हो जो हमें देखकर सर्वस्व स्वाहा करने वालों की कतार लग जाए।

▶ स्वयं निर्विघ्न तो यज्ञ निर्विघ्न

यदि यज्ञ में कोई कुछ भी सेवा नहीं करते परन्तु अपनी स्थिति को श्रेष्ठ व निर्विघ्न रखते हैं तो वे भी यज्ञ के सहयोगी हैं। जब एक मनुष्य की अपनी स्थिति में विघ्न होता है तो वह दूसरों को विघ्न अवश्य डालता है। चिरचिरा मनुष्य दूसरों से अवश्य टकराता है, जिससे गलत व्यवहार हुआ हो वह अवश्य ही दूसरों से गलत व्यवहार करता है, जिसमें स्वयं काम-क्रोध के कीटाणु बसे हों वह अवश्य ही उनका प्रसार करता है। परन्तु इन सब से जीवन में सन्तोष कहाँ...

यदि जीवन निर्विघ्न नहीं तो सच्चा सुख भी नहीं। विघ्नों की अग्नि शान्ति को जला डालती है। आप देख लें कि विघ्नों के बीज कहीं संकल्प रूप में आपने स्वयं में बोये हुए तो नहीं हैं? विघ्न तो आयेगे ही, परन्तु उनके वश न होना, धैर्यता व हिम्मत से उन्हें पार कर लेना - यही निर्विघ्न स्थिति है।

यदि आपके पुरुषार्थ में भी बार-बार विघ्न पड़ रहे हैं तो उसका कारण ढूँढ लो। थोड़ी सी मेहनत करके उन्हें दूर किया जा सकता है। और जिस दिन स्वयं के पुरुषार्थ का मार्ग साफ़ हो जाएगा, उसी दिन विघ्न आने कम हो जाएंगे और आने वाले विघ्नों को भी हम सहज ही पार कर सकेंगे।

- शेष पेज 9 पर...



दिल्ली-पीतमपुरा। 'हेल्दी वेल्दी हैप्पी लाइफ' विषयक कार्यक्रम में सभी को ब्लैसिंग देते हुए ब्र.कु. संतोष, सेंट पीटर्सबर्ग रशिया। साथ हैं ब्र.कु. प्रभा, सुरेश भाटिया तथा विनोद गर्ग, रिटायर्ड सीनियर ऑफिसर, एयर इंडिया।



महम-हरियाणा। महिला दिवस के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए बैंक मैनेजर श्रीमती एकता, एडवोकेट श्रीमती रंजना, ग्रिन्सीपल श्रीमती कनिका, ब्र.कु. चेतना तथा ब्र.कु. सुमन।



राजखरियार-ओडिशा। विधायक बसंत कुमार पांडा को आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी समझाते हुए ब्र.कु.सूर्य कांति।



ब्रह्मपुर-ओडिशा। नवनिर्वाचित जिला के सभ्य, सरपंच, जिला परिषद एवं अध्यक्ष के लिए आयोजित सम्मान समारोह में केक काटते हुए सांसद रानी प्रत्युषा राजेश्वरी सिंह देव, मेयर माधवी जी व ब्र.कु.मंजु। साथ हैं ब्र.कु.मालो, ब्र.कु. प्रभाति व ब्र.कु.लक्ष्मी।



हाथरस-उ.प्र.। 'व्यसन मुक्त भारत अभियान' के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हैं नगरपालिका अध्यक्ष ओमप्रकाश यादव, जिलाधिकारी अविनाश कृष्ण सिंह, नगरपालिका के अधिशासी अधिकारी अशोक शर्मा, ग्राम प्रधान उदयप्रताप सिंह, ब्र.कु.शांता, ब्र.कु.नीतू, ब्र.कु.उमा, ब्र.कु.दुर्गेश तथा अन्य।



निर्माण नगर-जयपुर। गर्मी में पक्षियों के लिए उद्यान में परिण्डे बांधने के कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए ब्र.कु. सरिता तथा ब्र.कु. भाई बहनें।

गीता में परमात्मा की तुलना प्रकृति से



जयपुर-भवानी नगर। आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् शम्भुदयाल बडगुर्जर, अध्यक्ष, राज्य खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड, राज. सरकार को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. गीता, माउण्ट आबू, मदनलाल शर्मा, विनोद जैन, मा. आबू तथा ब्र.कु. हेमा।



मनोहरथाना-राज.। महाशिवरात्रि के अवसर पर भाजपा मण्डल अध्यक्ष प्यारे लाल तंवर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. निशा तथा ब्र.कु. केसर। साथ हैं सरपंच श्रीमति निखिलेश नामा तथा अन्य।



फिरोजाबाद-उ.प्र.। नव दुर्गा चैतन्य झाँकी के उद्घाटन पश्चात् उपस्थित हैं एस.एस.पी. साहब, ब्र.कु. सरिता तथा अन्य।



दिल्ली-बख्तावरपुर। ज्ञानचर्चा के पश्चात् बॉडी बिल्डर मिस्टर वर्ल्ड मुकेश सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. गीता।



जौनपुर-उ.प्र.। शिव जयंती के अवसर पर व्यापार मण्डल के अध्यक्ष विवेक सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. नीलम तथा ब्र.कु. सुनीता।



चूरू-राज.। दुर्गाष्टमी महोत्सव को सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. सुमन।

- गतांक से आगे...

नक्षत्रों में चंद्रमा जैसी शीतलता है, तेजस्वी सूर्य समान है, लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि उसके नजदीक भी कोई नहीं जा सकता। बाहर खड़े रहो धूप में तो क्या उसकी तेजोमय किरणें चुभती हैं? भगवान की किरणें कोई चुभने वाली नहीं हैं। तेजस्वी जरूर है सूर्य के समान लेकिन चंद्रमा जैसी शीतलता भी उसमें समायी हुई है। इतना शीतल वो प्रकाश है, चुभने वाला प्रकाश नहीं। फिर कहा समस्त पर्वतों में मेरू अर्थात् सर्वोच्च हूँ मैं। समस्त पुरोहितों में बृहस्पति, समस्त सेना नायकों में कार्तिकेय, इतना शक्तिशाली है, कल्याणकारी भी है। समस्त जलाशयों में समुद्र अर्थात् सर्वगुणों में सागर के तरह अनंत है। समस्त महर्षियों में भृगु की तरह, जिसकी विचारधारा सब बातों में उच्च है। वाणी में दिव्य ओमकार अर्थात् सर्वश्रेष्ठ ध्वनि ओमकार की है। तो इसी तरह परमात्मा की ध्वनि भी सर्वश्रेष्ठ है ओमकार की तरह, समस्त अंचलों में हिमालय की तरह है अंचल, कोई उसको हिला नहीं सकता है। समस्त वृक्षों में पीपल है। पीपल क्यों है? आज दुनिया में भी पीपल की पूजा की जाती है। पीपल और तुलसी की पूजा क्यों की जाती है। ये दो की पूजा अवश्य होती है। कारण है, पीपल और तुलसी दो ही ऐसे हैं जो चौबीस घंटा ऑक्सीजन प्रदान करते हैं। रात्रि के समय में भी पीपल ऑक्सीजन देता है। लोगों को प्राण वायु देता है। इसलिए उसकी पूजा करते हैं कि कोई

उसको काटे नहीं। क्योंकि यही दो पेड़ है जो हमें चौबीस घण्टे ऑक्सीजन देते हैं। साथ ही साथ तुलसी के अंदर जो औषधि गुण हैं, वो भी बहुत महान है। इसलिए उसकी पूजा की जाती है। अर्थात् चौबीस घंटा परमात्मा भी कल्याणकारी है। सर्व के प्रति शुभ, जैसे कि प्राण वायु देने का कार्य, इंसान को सकाश व शक्ति देने का कार्य करते हैं। सिद्ध पुरुषों में कपिल है। गजराजों में ऐरावत है। इतना सुंदर दिव्य स्वरूप है। मनुष्य में राजा अर्थात् सर्वोच्च अर्थारिटी, सुप्रीम अर्थारिटी हैं परमात्मा। हथियारों में वज्र है। कोई उसको खत्म नहीं कर सकता है। गायों में सुरभि है, सबकी मनोकामना पूर्ण करने वाली। भक्तों में भक्तराज प्रह्लाद है। अर्थात् कितना अनन्य भाव है, सर्व के प्रति। पशुओं में सिंह शक्तिशाली है और पक्षियों में गरूड़ है। तीक्ष्ण बुद्धि है उसकी। शास्त्र धारियों में राम है। अर्थात् राम को जैसे आदर्श माना गया हर बात में, व्यवहार में, व्यक्तित्व आदि में, सब बातों में आदर्श बताया है। ऐसे परमात्मा भी

सर्वश्रेष्ठ आत्मा है। नदियों में गंगा अर्थात् इतना पवित्र निर्मल है। समस्त विद्या में अध्यात्म विद्या ऊर्चें ते ऊंची। समस्त ऋतुओं में वसंत ऋतु अर्थात् सदाकाल वसंत की तरह सर्व के प्रति स्नेह का सुंदर प्रवाह चलता ही रहता है। समस्त मुनियों में व्यास की तरह, मैं समस्त सृष्टि का बीज रूप हूँ। मेरी दिव्य विभूति का अंत नहीं है। इस तरह इक्कीस श्रेणी का वर्णन करते हुए उसकी सर्वोच्च शक्ति की, असीम ऐश्वर्य की महिमा बताया और कहा मेरी दिव्य विभूति का अंत नहीं है, कितना भी वर्णन करता जाऊं तो भी असीम है। सारा ऐश्वर्य, सौन्दर्य तथा तेजस्वी सृष्टियां, वह सिर्फ मेरे स्वरूप का एक अंश है। संसार में जो कुछ भी आप देखते हो, मेरी तुलना में कुछ भी नहीं है। ये भगवान ने स्पष्ट कर दिया। इसका अर्थ यह नहीं कि परमात्मा कण-कण में व्यापक है, नहीं। भावार्थ समझो! भगवान स्थूल धरातल पर बात नहीं करते हैं। इस तरह से अपने असीम ऐश्वर्य की महिमा का वर्णन सुनाया कि इस दुनिया में वह असीम ऐश्वर्य, सौन्दर्य, तेज आपको कुछ भी देखने नहीं मिलेगा जो परमात्मा का दिव्य स्वरूप है। इस तरह से ग्यारहवें अध्याय में भगवान विश्व रूप का दर्शन कराते हैं। भगवान अर्जुन को दिव्य दृष्टि प्रदान करते हैं और विश्व रूप में अपना असीम स्वरूप प्रकट करते हैं।

- क्रमशः

ख्यालों के आईने में...

अंधेरा वहाँ नहीं है
जहाँ तन गरीब है,
अंधेरा वहाँ है जहाँ
मन गरीब है।
ना कुछ बुरा है
ना बढ़िया है,
जो कुछ है सब
आपका नज़रिया है।।

जीवन में असफलता से
कभी निराश ना हों,
यदि सफल हुए तो
नेतृत्व कर सकेंगे,
यदि असफल हुए तो
मार्गदर्शन दे सकेंगे।



नवरंगपुर-ओडिशा। 'बेटी बचाओ सशक्त बनाओ अभियान' के उद्घाटन अवसर पर मंच पर उपस्थित हैं जिला परिषद अध्यक्ष, नगरपालिका अध्यक्ष, ब्र.कु. नीलम, ब्र.कु. सविता तथा अभियान यात्री।



मसूरी-हि.प्र.। भारत तिब्बत सीमा पुलिस अकादमी में त्रिदिवसीय 'तनाव नियंत्रण' कार्यशाला के पश्चात् समूह चित्र में आई.टी.बी.पी. के अधिकारियों तथा पुलिस कर्मचारियों के साथ ब्र.कु. अंकिता, ब्र.कु. कन्हैया, ब्र.कु. मेधा तथा अन्य।



मेरठ। महेन्द्र सिंह स्मारक इंटर कॉलेज मेरठ में टीचर्स के लिए 'रेस्पॉन्सिबिलिटी ऑफ टीचर्स' विषय पर कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. श्वेता, बहन गरिमा, कालेज के निदेशक जयवीर सिंह तथा टीचर्स।

कथा सरिता

एक औरत अपने परिवार के सदस्यों के लिए रोजाना भोजन पकाती थी और एक रोटी वह वहाँ से गुजरने वाले किसी भी भूख के

जो करोगे सो पाओगे

खिड़की पर रोटी रखती थी तो वह भगवान से अपने पुत्र की सलामती और अच्छी सेहत और घर वापसी के लिए प्रार्थना करती

लिए पकाती थी। वह उस रोटी को खिड़की के सहारे रख दिया करती थी, जिसे कोई भी ले सकता था। एक कुबड़ा व्यक्ति रोज उस रोटी को ले जाता और बजाय धन्यवाद देने के अपने रस्ते पर चलता हुआ वह कुछ इस तरह बड़बड़ाता- 'जो तुम बुरा करोगे वह तुम्हारे साथ रहेगा और जो तुम अच्छा करोगे वह तुम तक लौट के आएगा'। दिन गुजरते गए और ये सिलसिला चलता रहा। वो कुबड़ा रोज रोटी लेके जाता रहा और इन्ही शब्दों को बड़बड़ाता - जो तुम बुरा करोगे वह तुम्हारे साथ रहेगा और जो तुम अच्छा करोगे वह तुम तक लौट के आएगा।

वह औरत उसकी इस हरकत से तंग आ गयी और मन ही मन खुद से कहने लगी कि- 'कितना अजीब व्यक्ति है, एक शब्द धन्यवाद का तो देता नहीं है, और न जाने क्या-क्या बड़बड़ाता रहता है, मतलब क्या है इसका। एक दिन क्रोधित होकर उसने एक निर्णय लिया और बोली- मैं इस कुबड़े से निजात पाकर रहूंगी। और उसने क्या किया कि उसने उस रोटी में ज़हर मिला दिया जो वो रोज उसके लिए बनाती थी, और जैसे ही उसने रोटी को खिड़की पर रखने की कोशिश की, कि अचानक उसके हाथ काँपने लगे और रुक गये और वह बोली- हे भगवान, मैं ये क्या करने जा रही थी? उसने तुरंत उस रोटी को चूल्हे की आँच में जला दिया। एक ताज़ी रोटी बनायी और खिड़की के सहारे रख दी। हर रोज़ की तरह वह कुबड़ा आया और रोटी ले के... 'जो तुम बुरा करोगे वह तुम्हारे साथ रहेगा, और जो तुम अच्छा करोगे वह तुम तक लौट के आएगा' बड़बड़ाता हुआ चला गया। इस बात से बिल्कुल बेखबर कि उस महिला के दिमाग में क्या चल रहा है। हर रोज़ जब वह महिला

थी, जो कि अपने सुन्दर भविष्य के निर्माण के लिए कहीं बाहर गया हुआ था। महीनों से उसकी कोई खबर नहीं थी। ठीक उसी शाम को उसके दरवाज़े पर एक दस्तक होती है.. वह दरवाज़ा खोलती है और भौचक्की रह जाती है, वह अपने बेटे को अपने सामने खड़ा देखती है। वह पतला और दुबला हो गया था, उसके कपड़े फटे हुए थे और वह भूखा भी था, भूख से वह कमज़ोर हो गया था। जैसे ही उसने अपनी माँ को देखा, उसने कहा- माँ, यह एक चमत्कार है कि मैं यहाँ हूँ। आज जब मैं घर से एक मील दूर था, मैं इतना भूखा था कि मैं गिर गया, मैं मर गया होता!

लेकिन तभी एक कुबड़ा वहाँ से गुज़र रहा था। उसकी नज़र मुझ पर पड़ी और उसने मुझे अपनी गोद में उठा लिया। भूख के मारे मेरे प्राण निकल रहे थे। मैंने उससे खाने को कुछ मांगा। उसने निःसंकोच अपनी रोटी मुझे यह कह कर दे दी कि- मैं हर रोज़ यही खाता हूँ, लेकिन आज मुझसे ज़्यादा ज़रूरत इसकी तुम्हें है.. सो ये लो और अपनी भूख को तृप्त करो। जैसे ही माँ ने उसकी बात सुनी, माँ का चेहरा पीला पड़ गया और अपने आप को सम्भालने के लिए उसने दरवाज़े का सहारा लिया। उसके मस्तिष्क में वह बात घूमने लगी कि कैसे उसने सुबह रोटी में ज़हर मिलाया था, अगर उसने वह रोटी आग में जला के नष्ट नहीं की होती तो उसका बेटा उस रोटी को खा लेता और अंजाम होता उसकी मौत। और इसके बाद उसे उन शब्दों का मतलब बिल्कुल स्पष्ट हो चुका था- 'जो तुम बुरा करोगे वह तुम्हारे साथ रहेगा, और जो तुम अच्छा करोगे वह तुम तक लौट के आएगा'।

एक बार की बात है, एक नवविवाहित जोड़ा किसी किराए के घर में रहने पहुंचा। अगली सुबह, जब वे

आलोचना या आत्ममंथन

अरे वाह! लगता है इन्हें अक्ल आ ही गयी, आज तो कपड़े बिल्कुल साफ़ दिख रहे हैं, ज़रूर किसी ने टोका

नाशता कर रहे थे, तभी पत्नी ने खिड़की से देखा कि सामने वाली छत पर कुछ कपड़े फैले हैं, 'लगता है इन लोगों को कपड़े साफ़ करना भी नहीं आता। ज़रा देखो तो कितने मैले लग रहे हैं?' पति ने उसकी बात सुनी पर अधिक ध्यान नहीं दिया। एक-दो दिन बाद फिर उसी जगह कुछ कपड़े फैले थे। पत्नी ने उन्हें देखते ही अपनी बात दोहरा दी, कब सीखेंगे ये लोग कि कपड़े कैसे साफ़ करते हैं! पति सुनता रहा पर इस बार भी उसने कुछ नहीं कहा। पर अब तो ये आये दिन की बात हो गयी, जब भी पत्नी कपड़े फैले देखती भला-बुरा कहना शुरू कर देती। लगभग एक महीने बाद वे यँ ही बैठ कर नाशता कर रहे थे। पत्नी ने हमेशा की तरह नज़रें उठायीं और सामने वाली छत की तरफ देखा,

होगा! पति बोला, नहीं उन्हें किसी ने नहीं टोका। तुम्हें कैसे पता? पत्नी ने आश्चर्य से पूछा। 'आज मैं सुबह जल्दी उठ गया था और मैंने इस खिड़की पर लगे काँच को बाहर से साफ़ कर दिया, इसलिए तुम्हें कपड़े साफ़ नज़र आ रहे हैं' पति ने बात पूरी की। ज़िन्दगी में भी यही बात लागू होती है; बहुत बार हम दूसरों को कैसे देखते हैं ये इस पर निर्भर करता है कि हम खुद अन्दर से कितने साफ़ हैं! किसी के बारे में भला-बुरा कहने से पहले अपनी मनोस्थिति देख लेनी चाहिए और खुद से पूछना चाहिए कि क्या हम सामने वाले में कुछ बेहतर देखने के लिए तैयार हैं या अभी भी हमारी खिड़की गन्दी है! सोचें व विचार करें कि पहले क्या ज़रूरी है आलोचना या आत्ममंथन?

आज हमने भंडारे में भोजन करवाया। आज हमने ये बांटा, आज हमने वो दान किया.. हम अक्सर ऐसा कहते और मानते

हम केवल निमित्त...

भेज दिया है। उसने बिना कल की चिंता किए, सारे अनाज का भोजन बनाकर फकीरों और भूखों को खिला दिया और खुद भी भरपेट

हैं। इसी से सम्बंधित एक अविस्मरणीय कथा सुनिए... एक लकड़हारा रात-दिन लकड़ियां काटता, मगर कठोर परिश्रम के बावजूद उसे आधा पेट भोजन ही मिल पाता था। एक दिन उसकी मुलाकात एक साधु से हुई। लकड़हारे ने साधु से कहा कि जब भी आपकी प्रभु से मुलाकात हो जाए, मेरी एक फरियाद उनके सामने रखना और मेरे कष्ट का कारण पूछना। कुछ दिनों बाद उसे वह साधु फिर मिला। लकड़हारे ने उसे अपनी फरियाद की याद दिलाई तो साधु ने कहा कि- 'प्रभु ने बताया है कि लकड़हारे की आयु 60 वर्ष है और उसके भाग्य में पूरे जीवन के लिए सिर्फ पाँच बोरी अनाज है। इसलिए प्रभु उसे थोड़ा अनाज ही देते हैं ताकि वह 60 वर्ष तक जीवित रह सके।' समय बीता। साधु उस लकड़हारे को फिर मिला तो लकड़हारे ने कहा- 'ऋषिवर...!! अब जब भी आपकी प्रभु से बात हो तो मेरी यह फरियाद उन तक पहुँचा देना कि वह मेरे जीवन का सारा अनाज एक साथ दे दें, ताकि कम से कम एक दिन तो मैं भरपेट भोजन कर सकूँ।' अगले दिन साधु ने कुछ ऐसा किया कि लकड़हारे के घर देर सारा अनाज पहुँच गया। लकड़हारे ने समझा कि प्रभु ने उसकी फरियाद कबूल कर उसे उसका सारा हिस्सा

खाया। लेकिन अगली सुबह उठने पर उसने देखा कि उतना ही अनाज उसके घर फिर पहुँच गया है। उसने फिर गरीबों को खिला दिया। फिर उसका भंडार भर गया। यह सिलसिला रोज-रोज़ चल पड़ा और लकड़हारा लकड़ियां काटने की जगह गरीबों को खाना खिलाने में व्यस्त रहने लगा। कुछ दिन बाद वह साधु फिर लकड़हारे को मिला तो लकड़हारे ने कहा- 'ऋषिवर! आप तो कहते थे कि मेरे जीवन में सिर्फ पाँच बोरी अनाज हैं, लेकिन अब तो हर दिन मेरे घर पाँच बोरी अनाज आ जाता है। साधु ने समझाया, तुमने अपने जीवन की परवाह ना करते हुए अपने हिस्से का अनाज गरीब व भूखों को खिला दिया। इसीलिए प्रभु अब उन गरीबों के हिस्से का अनाज तुम्हें दे रहे हैं। कथा का मर्म है कि किसी को भी कुछ भी देने की शक्ति हम में है ही नहीं, हम देते वक्त ये सोचते हैं, कि जिसको कुछ दिया तो ये मैंने दिया! दान, वस्तु, ज्ञान, यहाँ तक कि अपने बच्चों को भी कुछ देते दिलाते हैं, तो कहते हैं मैंने दिलाया। वास्तविकता ये है कि वो उनका अपना है, आपको सिर्फ परमात्मा ने निमित्त मात्र बनाया है ताकि उन तक उनकी ज़रूरतें पहुँच सके। तो निमित्त होने का घमंड कैसा!



मऊ-उ.प्र.। दारा सिंह चौहान को उत्तर प्रदेश में जीत की बधाई एवं कैबिनेट मंत्री के रूप में सफल कार्यकाल की शुभकामना देने हेतु ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए कैबिनेट मंत्री दारा सिंह चौहान। साथ हैं ब्र.कु. विमला।



आवला-उ.प्र.। महाशिवरात्रि के कार्यक्रम के दौरान एस.डी.एम. प्रमिल कुमार सिंह को इश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पार्वती। साथ हैं ब्र.कु. नीता तथा अन्य।

कल्याणकारी यज्ञ को... - पेज 7 का शेष

योग व पवित्रता का सहयोग दो

शक्तिशाली आत्मायें, योगी आत्मायें, अपनी श्रेष्ठ वृत्ति से बहुत कुछ कर सकती हैं। परन्तु ऐसा न हो कि जिन्होंने जीवन स्वाहा कर दिया, वे विघ्न-युक्त हों और जो घर-गृहस्थ में रहते हैं वे निर्विघ्न हों। यदि ऐसा हुआ तो संसार ऐसी आत्माओं पर अवश्य हँसेगा।

जीवन स्वाहा करने वालों को ही महान योगी व पवित्रता की देवी बनना चाहिए। यदि ये दो शक्तियाँ हमारे पास होंगी, तो चाहे कोई अन्य कितनी भी गुट बाजी करे, चाहे कितने भी प्रयास एकता को तोड़ने के करे, चाहे कितनी भी गलत शिकायतें करे, कुछ भी कर नहीं पायेगा।

तो आओ, यज्ञ को व स्वयं को निर्विघ्न बनाने के लिए हम प्रतिदिन कुछ विशेष योग अभ्यास करें। इस स्वमान को बढ़ाएं कि हम तो सम्पूर्ण विश्व को विघ्नों से मुक्त करने वाले हैं, तब भला हमारे पास विघ्न कहाँ से आये। योग के वायब्रेशन्स व शुभ भावनाओं के वायब्रेशन्स के द्वारा हम सब कुछ कर सकते हैं। हमने पवित्रता का पथ चुना है, सर्वस्व दांव पर लगाया है, कहीं हमें तथाकथित पाण्डवों की तरह भटकना न पड़े। पवित्रता की दिव्यता के आगे तो सम्पूर्ण विश्व झुकेगा। तब भला विश्व को झुकाने वाले किसी कमज़ोरी के आगे कैसे झुक सकते हैं।

हे यज्ञ प्रेमियों...

हमारा सम्बोधन उस महान व पवित्र ब्राह्मण परिवार को है, जो जहाँ तहाँ इस यज्ञ से संलग्न है। ज़रा विचार करो -

तुम यहाँ क्यों आए हो..? तुमने अपना जीवन क्यों कुर्बान किया...? तुमने यह त्याग तपस्या का पथ क्यों चुना...?

चलो चलें स्वचिंतन के तले में ... अब भी क्या व्यर्थ की ओर झुकाव है, तम्हें अब चाहिए क्या... सब कुछ तो तुम्हें प्राप्त है... कहीं ऐसा तो नहीं कि अपना सब कुछ छोड़कर तुम पुनः माया में उलझ गए हो...!

भगवान ने तुम्हें यज्ञ की ज़िम्मेदारी दी है... सोचो क्यों... योग्य जानकर, अब भगवान से बेवफाई न करना... उसकी आशाओं के दीप जलाना, स्वयं भी उमंग में रहना व औरों को भी व्यर्थ से मुक्त करना।

भगवान ने स्वयं आह्वान किया है ... "अब मेरे यज्ञ को निर्विघ्न बनाओ" - कितना सुन्दर व भाव भरा आह्वान है... कौन आगे आयेगा, कौन त्याग करेगा... जो करेगा वे महान होंगे, वे पूजनीय होंगे। मुख्य विघ्न अपवित्रता का, त्याग की कमी का है, तेरे मेरे का ही है। इसे झटके से तोड़ दो। भगवान की सुनो तो वह तुम्हारी जन्म जन्म सुनेगा।

हम आपको एक बहुत ही आसान तरीका बता रहे हैं इस जीवन को समझने का। चाहे विद्यार्थी या आम इंसान, या किसी भी उम्र वाला व्यक्ति हो, सबके लिए ये बात है। आप सबसे पूछो, आप कोई काम क्यों कर रहे हैं, तो उनके पास उत्तर ही नहीं है। कहते हैं, बस अच्छा लगता है। लेकिन कोई भी

उलझन बड़ी है.. ?

समय में उसे ऐसी चीज दो जिसमें कुछ सोचना हो, कुछ करना हो, बुद्धि लगानी हो, मन को अच्छा ही नहीं लगेगा। वो उसे तुरंत छोड़कर बैठ जायेगा, कहेगा

रही है जो आपकी फेवरेट है उसे देखना है। जैसे ही आप पढ़ने बैठे, आपका मन नहीं लगा पढ़ाई में, तो हम तुरंत ही वहाँ से हटेंगे और फिल्म देखने लग जायेंगे,

बिल्कुल इंटरैस्ट ही नहीं है। आपका भविष्य कैसे बनेगा, वीडियो देखने से बनेगा या पढ़ाई करने से बनेगा। हम ये बात नहीं समझ पा रहे हैं। लोग आपको हमेशा यही कहते मिलेंगे या सलाह देते मिलेंगे कि अरे! जब आपका मन पढ़ाई में नहीं लगे तो थोड़ा सा फिल्म देख लो, गीत सुन लो, आपका मन हल्का हो

जायेंगे, या टीवी खोल के बैठ जायेंगे। थोड़ी देर हँस लेंगे, फिर बंद कर देंगे। ये आराम या रिलैक्सेशन एक एडिक्शन



ब.कु. अनुज, दिल्ली

की तरह आपके जीवन में शामिल हो जाएगा, जो आपका सब कुछ नष्ट करके छोड़ेगा।

ज़रा ध्यान से अपनी दसों इंद्रियों को खोलकर इस बात को समझ लें कि यदि आपके जीवन में कोई लक्ष्य नहीं है, अर्थात् कुछ करने का नहीं है, तो आपका मन कुछ न कुछ तो करेगा ना। आज नहीं तो कल वो गलत दिशा में जाएगा ही जाएगा। चाहे सिगरेट पीएगा, चाहे शराब पीएगा, ज़्यादा खाना खाएगा, चाहे फिल्में देखेगा या वीडियो, लेकिन ये कब तक चलेगा! फिर हमें कुछ भी समझ नहीं आएगा, फिर मन हमारा बिल्कुल ही डल हो जाएगा, नष्ट हो जाएगा। इसलिए हमें अपनी बुद्धि को एक लक्ष्य देना ही होगा, जिसमें मन अपनी सारी शक्ति झोंक दे उसे पाने में। बुद्धि वो लगाम है जो ऐसा कर सकती है। इस उलझन को आप सभी समझो।

आज हमारा अचेतन मन या अचेतन मन हमारे चेतन मन पर पूरी तरह से हावी है। एक दिन जब हमें कुछ समझ नहीं आता अर्थात् जब हम पूरी तरह से फँस जाते हैं, उलझ जाते हैं, तब हम वो कोई भी कार्य जो हमारे लिए अच्छा नहीं है, वो करने लग जाते। जब उसकी आदत पड़ जाती है, तो उसको हमें छोड़ना मुश्किल नहीं लगता क्या! भाव यह है कि हमें आज समझ नहीं आ रहा है कि हमें करना क्या है ?



रचनात्मक कार्य करने को कहा जाए तो तुरंत दर्द होने लगता है, अच्छा नहीं लगता। या दूसरी भाषा में कहें कि जिसमें हमारी रुचि नहीं है उसे हम छोड़ते जा रहे हैं, अवॉइड कर रहे हैं। हमारा मन ऐसा ही है। जब भी, खासकर आज के

मेरा मन नहीं कर रहा है। आपको एक दिन एक छोटा सा काम करना है, या यूँ कहें कि कुछ ऑब्जर्व करना है। एक तरफ आपको कुछ पढ़ना है, किसी सब्जेक्ट की तैयारी करनी है, दूसरी तरफ एक बहुत अच्छी फिल्म चल

अर्थात् मज़ा लेने लग जायेंगे। यह स्वाभाविक है, ऐसा लोग कहते हैं। लेकिन हम कहते हैं ये स्वाभाविक नहीं है, हमने ऐसी मान्यता बनायी है, क्योंकि पढ़ने के लिए थोड़ा कमर दर्द होगा, थोड़ा सर दर्द होगा, जिसमें कि आपका

जायेगा। लेकिन यदि आपने ज़रूरत से ज़्यादा देख लिया, या थोड़ा भी इससे आपको रिलैक्सेशन मिली तो आप उससे अटैच हो जायेंगे। फिर जब भी आपका मन नहीं लगेगा पढ़ने में, तब आप तुरंत ही यू ट्यूब खोलकर बैठ

उपलब्ध पुस्तकें



प्रश्न: सेवाकेंद्र में आने वाले भाई-बहनों में कुछ दिनों के बाद योग का रस नहीं रहता, क्या करें?

उत्तर: योग का वातावरण बनाना व योग का रस बिठाना यह हमारे हाथ में है। आप योग कमेन्ट्री से करायें। गृहस्थ से आने वाले भाई-बहनों व्यस्त भी रहते हैं व समस्याओं में भी रहते हैं। परन्तु योग व स्वमान ही इसका समाधान है, वह उनके अनुभव में आ जाए। आने वालों को इस तरह आधा-आधा घण्टा योग करायें। वे स्वयं ही योग कर लें या स्वयं ही मुरली पढ़ लें, इससे ज्ञान-योग के प्रति रस नहीं आयेगा। क्योंकि अधिकतर आत्माओं के पास एकाग्रता की काफी कमी होती है।

प्रश्न: मुझे अपवित्रता बहुत परेशान करती है, इस कारण डिप्रेशन भी हो रहा है, इससे मुक्ति के लिए क्या अभ्यास करें?

उत्तर: पवित्रता मनुष्य की सबसे बड़ी पूंजी है। इसको निरंतर बनाये रखने के लिए आप यह अभ्यास करें... रोज सवेरे उठते ही और सोने से पूर्व एक अव्यक्त मुरली की स्टीड करके दस प्वाइंट्स लिखें और उन्हें दिन में याद करने का अभ्यास करें। मैं परम पवित्र आत्मा हूँ, पानी को दृष्टि देते हुए सात बार संकल्प करें और पानी को इसी विधि के अनुसार चार्ज करके पियें। हर घंटे में एक बार सभी को चमकती हुई मणि आत्मा रूप में देखने का अभ्यास करें। धीरे-धीरे आपका योग भी लगने लग जाएगा। फिर आप अपने योग की साधना को बढ़ाते हुए चलना।

परन्तु एक घंटा रोज पवित्रता के लिए योग-अभ्यास अवश्य करें। योग से पूर्व पहले दो स्वमान याद करना - मैं पवित्रता का फरिश्ता हूँ, मैं प्रकृति का मालिक हूँ।

प्रश्न: आजकल तंत्र-मंत्र का प्रभाव बहुत बढ़ रहा है, इस तंत्र-मंत्र के



मन की बातें

- ब.कु. सूर्य

प्रभाव से बचने के लिए हम क्या करें ?

उत्तर: तंत्र-मंत्र भी संकल्प शक्ति ही है। हमारे पास सबसे शक्तिशाली संकल्प है- मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ... परमात्म शक्तियाँ मेरे पास हैं... स्वयं सर्वशक्तिवान मेरे सिर पर छत्रछाया है। इसलिए दृढ़तापूर्वक संकल्प कर दो कि मुझ पर इन सबका कोई असर हो ही नहीं सकता। याद रखें - जो आत्माँ मास्टर सर्वशक्तिवान के नशे में रहती हैं व निर्भक हैं, तंत्र-मंत्र, ब्लैक मैजिक उन पर कोई भी प्रभाव डाल नहीं सकता। प्रतिदिन सवेरे सात बार संकल्प करें- मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। इससे आपके चारो ओर शक्तिशाली प्रभामंडल निर्मित हो जाएगा।

प्रश्न: बाबा हमेशा कहते हैं कि कर्म

करते हुए कर्म से न्यारे रहो, वह कैसे? कृपया स्पष्ट करें।

उत्तर: हर मनुष्य निरंतर कर्म कर रहा है, वह कर्म उस पर अपना प्रभाव डाल रहा है। हमारा लक्ष्य है - कर्मातीत होना। कर्मातीत स्थिति का अर्थ है कर्म के प्रभाव से व परिणाम के प्रभाव से भी मुक्त रहना। कर्म करने से पूर्व इस तरह अभ्यास करें - संकल्प करें कि मेरा हर कर्म परमात्म अर्थ है, मैं अपने या परिवार के लिए कर्म नहीं कर रहा हूँ। अपने कर्मों को प्रभु अर्पण कर दें... मैं

आत्मा इन कर्मेन्द्रियों से कर्म करा रही हूँ और सर्वशक्तिवान बाबा हज़ार भुजाओं सहित मेरे साथ हैं। कभी परमात्म स्वरूप पर बुद्धि को स्थिर करके कर्म करें। ऐसा करने से कर्म करते हुए भी न्यारेपन की अनुभूति होती रहेगी।

प्रश्न: अचानक मेरे जीवन में उदासी व एकाकीपन छा गया है, मुझे इस स्थिति से बाहर निकलने के लिए कोई भी उपाय नहीं सूझ रहा। इस समस्या से बाहर निकलने का कोई मार्ग बतायें।
उत्तर: मन की समस्या अति गंभीर है। यह पूर्व जन्म में अज्ञानेवश हुए विकर्म के परिणाम स्वरूप होती है। इससे बाहर निकलने के लिए यह अभ्यास कीजियेगा - प्रतिदिन 108 बार लिखना - 'मैं एक महान आत्मा हूँ'। सवेरे जल्दी उठकर ईश्वरीय महावक्य पढ़ें।

कुछ समय एकांत में शिवबाबा से रूहरिहान करें। इससे कुछ दिन में ही चित्त शांत हो जाएगा। उदासी एकाकीपन की समस्या भी समाप्त हो जायेगी।

प्रश्न: बाबा कहते हैं कि मन के द्वारा सबको वायब्रेशन्स दो, वाचा के द्वारा ज्ञान दान करो और कर्मणा के द्वारा गुणों का दान करो। यह तीनों कार्य साथ-साथ करने की विधि क्या है?
उत्तर: सारे दिन में यदि हमारे मन में श्रेष्ठ विचार होंगे तो सारे दिन हमारे चारो ओर श्रेष्ठ वायब्रेशन्स फैलते रहेंगे। जितना सारा दिन हम योगयुक्त रहेंगे तो हमसे चारो ओर लाइट और माइट फैलती रहेगी, क्योंकि योगी आत्माएं चलते-फिरते लाइट हाउस हैं। इसी कर्मक्षेत्र पर रहते हुए हम स्वमान का अभ्यास करेंगे तो उसी तरह के वायब्रेशन्स चारो ओर फैलते जाएंगे। जब भी कोई व्यक्ति हमें मिले तो हम उसे ज्ञान दें, उसे सच्ची राह दिखायें, इस भावना के साथ कि इसका भी प्रभु मिलन हो जाए।

कर्म करते हुए यदि हम सरलचित्त होंगे, यदि हमारे चेहरे पर मुस्कान होगी, कर्म करते भी हम यदि शांत स्वभाव को कायम रखेंगे, कर्म में ऊपर-नीचे होने पर हम तनावग्रस्त नहीं होंगे, यदि कर्मक्षेत्र पर हम बहुत सहनशील बनकर रहेंगे, हमारी वाणी में मधुरता होगी, हम क्रोध और अहंकार से मुक्त होंगे तो लोग हमसे गुण सीखते रहेंगे। इन तीनों सेवाओं से अत्यधिक पुण्य का बल मिलता है।

Contact e-mail - bksurya@yahoo.com



चाइना। सू नाम की महिला की 'स्पीरिचुअल रिसर्च कमेटी' में माउण्ट आबू की राजयोगिनी ब्र.कु. सविता को 100वें पब्लिक स्पीरिचुअल कार्यक्रम में आध्यात्मिक ज्ञान देने के लिए आमंत्रित किया गया। इस कार्यक्रम में बहन सू ने कहा कि उनका स्कूल अभी से सभी ब्रह्माकुमारीज की गतिविधियों के लिए खुला रहेगा। ब्र.कु. सविता ने 'मेडिटेशन, बेटर देन मेडिसिन' विषय पर सम्बोधित किया। बहन चैन, एन.सी.ओ., चाइना ने ब्र.कु. सविता के उद्बोधन को ट्रांसलेट किया तथा मेडिटेशन के प्रति सभी का मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम में लगभग 1300 चाइना के भाई बहनें उपस्थित रहे। चाइना के अंदर इस कार्यक्रम को चालीस हजार लोगों ने ऑनलाइन देखा तथा लाभ लिया।

मानसिक तनाव दूर करे ज्ञान मुद्रा

आज की भोगवादी विकृति के कारण हर आदमी प्रतिस्पर्धा में जी रहा है। सामाजिक प्रतिष्ठा की अंधी दौड़ में व्यक्ति ने जीवनचर्या को नष्ट करके अकेला पैसा कमाने की धुन को ही जीवन का एकमात्र उद्देश्य बना लिया है। साथ ही एकला चलो की फूट भरी नीति ने सामाजिक व्यवस्था को छिन्न-भिन्न करके सामूहिक परिवार की बहुउद्देशीय प्रणाली को रुढ़िवादी करार देकर स्वार्थ

में सुख और आनंद की खोज करना चाहता है। किन्तु सुख और आनंद तो परमात्मा के सानिध्य से ही प्राप्त हो सकता है। नश्वर पदार्थों में ऐसा सामर्थ्य कदापि नहीं है। इस कारण हमारे ऋषि-महर्षियों ने संयम को प्रधानता दी है। वेद में कहा - 'तेन व्यक्तेन भुज्जीया मा कस्य स्विद्वनम्।' अर्थात् संसार की चीजों का त्याग पूर्वक उपभोग करो। कर्मों में शंका न करो।

प्रयोग भी बहुत गहरा विज्ञान होता है, किन्तु हम भारतीयों के इस ज्ञान को रूढ़िवाद बताकर उससे विमुख कर दिया जाता है। फिर इसी ज्ञान को अपनी निजी खोज बताकर परिवर्तित करके नोबल पुरस्कार जीत जाते हैं। इस पश्चिमी सोच को अब जानकर सावधान होना होगा।

आयुर्वेद ने समस्त मानव रोगों का मूल कारण वात पित्त कफ की विषमावस्था बताई है। मनुष्य ही नहीं, यह समस्त सृष्टि पंच भौतिक तत्वों से निर्मित है। ये पंच भौतिक तत्व ही सब रोगों का उपचार है।

परमात्मा ने मनुष्य के हाथ में पाँचों तत्वों को समाविष्ट किया है। यदि हम कहें कि परमात्मा ने पूरा अस्पताल मानव के हाथ में दे दिया है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं है। मनुष्य के हाथ का अंगूठा अग्नि तत्व का द्योतक है। तर्जनी (अंगूठे के पास वाली) अंगुली वायु तत्व है, मध्यमा आकाश, अनामिका पृथ्वी तत्व तथा कनिष्ठिका तत्व की द्योतक है। इन अंगुलियों को विभिन्न क्रम में मिलाने से अनेक प्रकार की हस्तमुद्राएँ बनती हैं जिनका थोड़ी देर अभ्यास करके मानव के असाध्य रोगों का उपचार हो सकता है। जितने भी मानसिक क्रियाकलाप हैं उन सबका सम्बंध मन से होता है। चूंकि ज्ञानमुद्रा का सम्बंध मन से है, इसलिए ये मुद्रा करने से मन के रोग दूर हो जाते हैं। अनिद्रा, मानसिक अवसाद, स्मृतिभंग, तनाव, उच्च रक्तचाप, निम्न रक्तचाप, सिरदर्द, बेचैनी, क्रोध, चिन्ता, भय इत्यादि सब रोग इस मुद्रा से दूर हो जाते हैं। मन की एकाग्रता, स्मरण शक्ति की वृद्धि के लिए ध्यान, धारणा, समाधि अर्थात् संयम के लिए इस मुद्रा का विशेष अभ्यास करें।



की पराकाष्ठा मिया बीबी दोऊ जने किसको पीस और चने को जीवन का परम उद्देश्य गेहूँ स्वीकार कर लिया, अर्थात् संयुक्त परिवारों का तेज़ी से विघटन होकर एकल परिवार होना भी मानसिक तनावों का एक कारण है, क्योंकि संयुक्त परिवारों में घर के सब काम अन्य सदस्यों में बंटे हुए थे, इस कारण मानसिक तनाव नगण्य थे। किन्तु आज एक व्यक्ति पर ही सब ज़िम्मेदारी होने के कारण तनाव होना स्वाभाविक ही है। फिर सामाजिक प्रतिष्ठा की धुन इन तनावों को और बढ़ा देती है। पैसा कमाने की धुन ने मनुष्य की नींद हराम कर दी है, उसे भोजन तक का समय नहीं मिलता। आज का इंसान भौतिक पदार्थों

तो आइए सुख और आनंद प्राप्ति हेतु मानसिक द्वन्द्वों से छुटकारा पाने के लिए ऋषि-महर्षियों ने सुखी जीवन जीने का जो योग मार्ग दर्शाया है उसका तनिक सा अभ्यास करें। हम केवल मानसिक तनाव ही दूर नहीं कर सकते, बल्कि जीवनमुक्त स्थिति और ईश्वर की प्राप्ति भी कर सकते हैं जो मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य है। महर्षि पतंजलि ने योग की परिभाषा में कहा कि योगश्चित्रवृत्ति निरोधः अर्थात् कि वृत्तियों का निरोध ही योग है, इसलिए मानसिक तनाव हमारे तन की चंचलता स्वरूप उत्पन्न विकार है जिनका निर्वाह केवल योग के द्वारा ही संभव होगा। यह मन वायु से भी अधिक गतिमान है।

ऋषि-महर्षियों का मामूली सा



ओ.आर.सी.-गुरुग्राम। 'होप हीलिंग हैपीनेस' कार्यक्रम में डॉक्टर्स को सम्बोधित करते हुए जी.बी. पंत हॉस्पिटल के हृदयरोग विशेषज्ञ डॉ. मोहित गुप्ता तथा इन्टरएक्टिव बीज प्रा.लि. कम्पनी की निदेशिका मोनिका गुप्ता।



आगरा-शास्त्रीपुरम। नवरात्रि के उपलक्ष्य में चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करने के बाद समूह चित्र में विधायक चौ. उदयभान सिंह, ब्र.कु. सरिता, ब्र.कु. मधु तथा अन्य।



गोरखा-नेपाल। भूकम्प प्रसिद्ध क्षेत्र गोरखा में राजयोग भवन शिलान्यास कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. परणीता, ब्र.कु. शैलेश राज, ब्र.कु. अप्सरा, प्रहरी निरीक्षक बट्टी बहादुर पौडेल, अमरज्योति मा.वि. के प्रधानाध्यापक गोविन्द खनाल, डॉ. कालू शर्मा, वडा नागरिक मंच की संयोजक इन्दिरा देवकोटा तथा अन्य।



द्वाराहाट-उत्तराखण्ड। स्यालदे विखौती मेले में लगाई गई आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का अवलोकन करने के पश्चात् विधायक महेश सिंह नेगी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कंचन। साथ है ब्र.कु. दीपा।



हाथरस-उ.प्र.। हसायन में ईश्वरीय सेवाओं के एक वर्ष पूर्ण होने पर आयोजित वार्षिकोत्सव कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए जिलाधिकारी अविनाश कृष्ण सिंह, ब्लॉक प्रमुख ठाकुर सुमन्त कुमार सिंह, नगर पंचायत अध्यक्ष सेठ ओम प्रकाश यादव, पूर्व चेयरमैन सोनू अग्रवाल, तहसीलदार राजीव राज, ब्र.कु. शान्ता, ब्र.कु. दुर्गेश, ब्र.कु. उमा तथा अन्य।



झालरापाटन-राज.। योग समिति के सदस्यों को सात दिवसीय मेडिटेशन कोर्स करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. मीना तथा ब्र.कु. नेहा।

आध्यात्मिक ज्ञान से ही सही और गलत की होती पहचान

‘विज़डम फॉर चेंजिंग टाइम्स’ विषय पर दो दिवसीय सम्मेलन में व्यापार जगत से जुड़े 1500 लोगों ने भाग लिया

अगर हमें कुछ बदलना है, वो है हमारा विचार - ब्र.कु. शिवानी, पुण्य कर्म करना ही आशीर्वाद प्राप्त करना - ब्र.कु. बृजमोहन

ओ.आर.सी.-गुरुग्राम। संतुलित जीवन जीने के लिए आध्यात्मिक शक्ति बहुत ज़रूरी है। उक्त विचार हरियाणा सरकार के भूमि सुधार विकास निगम के अध्यक्ष अजय गौड़

व्यापार और उद्योग जगत के लोगों के लिए इस प्रकार के कार्यक्रम बहुत ज़रूरी हैं। ऐसे कार्यक्रमों से सकारात्मक परिवर्तन आता है। ब्रह्माकुमारीज की सुप्रसिद्ध मोटिवेशनल

है कमाई। कमाई तो हर व्यक्ति करता है, लेकिन एक कमाई है जो अल्पकाल की है और दूसरी कमाई है जो सदाकाल की है। उन्होंने कहा कि सच्चा धनवान व्यक्ति वो है जिसके पास ज्ञान, गुण एवं शक्तियों का खज़ाना है।

ओ.आर.सी. निदेशिका ब्र.कु. आशा ने कहा कि आज समय अनिश्चितताओं के दौर से गुजर रहा है। किसी समय कैसी भी परिस्थिति आ सकती है। विपरीत परिस्थितियों में संतुलन बनाने के लिए हमें आध्यात्मिक शक्ति की परम आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि जीवन में कर्मयोग का बहुत महत्व है। कर्मयोग का अर्थ ही होता है कि हम कार्य करते हुए भी साक्षीभाव में स्थित रहें।

फरीदाबाद से आई ब्र.कु. उषा ने सभी को राजयोग की गहन अनुभूति कराई। दिल्ली के उद्योगपति आर.एन. ग्रोवर ने सबका स्वागत करते हुए कार्यक्रम की शुरुआत की तथा साथ ही उन्होंने अपने जीवन का अनुभव भी साझा किया। मुम्बई से आये ब्र.कु. हरीश मेहता ने संस्था का परिचय दिया तथा ब्र.कु. सुरेन्द्र ने सबका धन्यवाद दिया। कार्यक्रम का संचालन मुम्बई से आई वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. किरिना ने किया।



सम्मेलन में दीप प्रज्वलित करते हुए ब्र.कु. बृजमोहन, ब्र.कु. आशा, ब्र.कु. सुरेन्द्र, उद्योगपति आर.एन. ग्रोवर, अजय गौड़ तथा अन्य।

ने ब्रह्माकुमारीज के व्यापार एवं उद्योग प्रभाग के दो दिवसीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में ‘विज़डम फॉर चेंजिंग टाइम्स’ विषय पर व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि आध्यात्मिकता से ही जीवन में श्रेष्ठ संस्कारों का समावेश होगा। हरियाणा सरकार के वित्तमंत्री कैप्टन अभिमन्यु ने कहा कि ज्ञान से ही सही और गलत का अंतर स्पष्ट होता है। ज्ञान से मानव का विवेक जागृत होता है। उन्होंने कहा कि

स्पीकर ब्र.कु. शिवानी ने कहा कि आज दुनिया में जिस प्रकार की परिस्थितियाँ निर्मित हो रही हैं, इन सबका मूल कारण हम सब हैं। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार के हमारे विचार होंगे, उसी प्रकार का वातावरण बनता है। अगर हमें कुछ बदलना है, तो सबसे पहले अपने विचारों को बदलना ज़रूरी है। ब्रह्माकुमारीज के अतिरिक्त सचिव ब्र.कु. बृजमोहन ने कहा कि व्यापार का मतलब होता

सुरक्षित बनाती है आज्ञाकारिता



दीप प्रज्वलित करते हुए अर्जुन दास, ब्र.कु. चित्रेखा, ब्र.कु. प्राची, ब्र.कु. नूतन व ब्र.कु. पूजा।

भिलाई नगर-छ.ग.। सुख शांति का आधार माँ-बाप की आज्ञा का पालन करना है। आज्ञाकारी मनुष्य का महत्व हर क्षेत्र में है। ले लो दुआएँ माँ-बाप की, सिर से उतरेगी गठरी पाप की। उक्त उद्गार ब्र.कु. चित्रेखा ने ‘आओ गुणवान बनें’ मासिक कार्यक्रम में व्यक्त किये। इस माह का गुण आज्ञाकारी था, जिसके अंतर्गत सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि आज्ञा का पालन करने पर हम जीवन भर निश्चिंत, सुरक्षित एवं विश्वास पात्र बन कर उनके दिल में जगह बना लेते हैं।

मुख्य अतिथि समाज सेवी एवं छत्तीसगढ़ चेंबर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष अर्जुन दास ने कहा कि आज्ञा का गुण भाई

की तरह है, हमें आज्ञाकारी बन माता-पिता, गुरु एवं संतों की आज्ञा का पालन करना चाहिए, जिससे दुआओं का दरवाज़ा खुल जाता है। जहाँ अच्छा वातावरण है वहाँ स्वर्ग है। वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. प्राची ने कहा कि आज्ञाकारी का अर्थ कहना मानना ही नहीं, वरन् सामने वाले की भावनाओं और आशाओं के प्रति क्रियाशील रहना है। आज्ञाकारिता का गुण हमें देवता बनाता है। ब्र.कु. नूतन ने कहा कि यदि हम परमात्मा से संबंध जोड़कर शक्तिशाली बनें तो गुणों से भरपूर हो जायेंगे। कार्यक्रम के दौरान सभी को राजयोग की गहन अनुभूति भी कराई गई। कार्यक्रम का सुंदर संचालन ब्र.कु. पूजा ने किया।

ब्रह्माकुमारी संस्थान् संस्कारों का परिवर्तन करने की रखता ताकत

पुष्पारानी दीदी की प्रथम पुण्य तिथि पर पुष्पांजलि

नागपुर-महा.। विश्व शांति सरोवर में पुष्पारानी दीदी के प्रथम पुण्य स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए महाराष्ट्र राज्य ऊर्जा मंत्री एवं नागपुर के पालक मंत्री चन्द्रशेखर बावणकुळे ने कहा कि दीदी

वाला है। यह मनुष्य के कुसंस्कारों को सुसंस्कार में परिवर्तन करने की ताकत रखता है। इस अवसर पर उन्होंने दीदी को श्रद्धा सुमन अर्पित किये। सांसद विकास महात्मे ने कहा कि पुष्पारानी दीदी के जीवन से हमें ये सीखने

में एकमात्र संस्थान है। स्वयं सेवक संघ के राजेश लोया ने कहा कि दीदीजी एक ऐसा फूल थीं जिन्होंने पूरे विदर्भ को खुशराबू से भर दिया। अब उनसे गुण लेकर समाज की सच्ची सेवा करें, यही उनके लिए हमारी सच्ची श्रद्धांजलि

राजयोगी ब्र.कु. सूर्य ने कहा कि दीदी एक महान आत्मा थीं। उन्होंने दिल से सभी आत्माओं की सेवा की, और आज भी अव्यक्त रूप से वे हमें हमारे सुंदर जीवन के लिए शुभभावनाएँ तथा दुआएँ दे रही हैं। डॉ. दिलीप जीमसे ने कहा

चलाये जाने वाला मेडिटेशन कोर्स कराना चाहिए। समाज परिवर्तन के लिए ताकतवर होना ज़रूरी है, जिसके लिए ब्रह्माकुमारीज का राजयोग मेडिटेशन करना होगा। इसके साथ ही उन्होंने दीदीजी को स्नेहांजलि अर्पित की।



ऊर्जा व पालक मंत्री चन्द्रशेखर बावणकुळे को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. रजनी व ब्र.कु. मनीषा।

जी ने परमात्मा की श्रीमत पर चलते हुए दूसरों का जीवन मूल्यवान बनाने के लिए अपना जीवन दिया। उन्होंने ब्रह्माकुमारी संस्था की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस संस्थान का कार्य परिवार, समाज तथा पूरे विश्व को मज़बूती प्रदान करने

को मिलता है कि हमें परिस्थितियों से घबराना नहीं चाहिए, बल्कि हिम्मत से आगे बढ़कर उसका सामना करना चाहिए। साथ ही उन्होंने प्रशंसा करते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारीज शक्तियों से सुसज्जित, महिला द्वारा संचालित विश्व



कार्यक्रम के दौरान पुष्पारानी दीदी की स्मृतियों की ‘पुष्पांजलि डायरी’ का विमोचन करते हुए ब्र.कु. रजनी, ब्र.कु. रुक्मिणी, ब्र.कु. सूर्य तथा शहर के प्रबुद्ध जन।

होगी। रिटायर्ड हाईकोर्ट जस्टिस शेणडोण गांवकर ने कहा कि दीदी जी से मैं जब भी मिलता था तो मुझमें एक असीम ऊर्जा का संचार होता था। उस ऊर्जा को मैं आज भी स्वयं में महसूस कर सकता हूँ। माउण्ट आबू से आये

कि दीदी की दूरदृष्टि के परिणामस्वरूप इस विश्व शांति सरोवर की परिकल्पना का साकार रूप हम यहाँ देख रहे हैं। पूर्व मंत्री विनोद गुडधे पाटील ने कहा कि किसानों की आत्महत्या रोकनी है तो ग्रामीण क्षेत्रों में ब्रह्माकुमारीज द्वारा

उपस्थिति में पुष्पारानी दीदी जी पर छपी डायरी का विमोचन किया गया। नागपुर क्षेत्र की संचालिका ब्र.कु. रजनी ने सबका आभार व्यक्त किया और अमरावती सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीता ने मंच का कुशल संचालन किया।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510. सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088, Email- omshantimedia@bkivv.org, mediabkm@gmail.com, Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 190 रुपये, तीन वर्ष 570 रुपये, आजीवन 4500 रुपये। विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क ‘ओमशान्ति मीडिया’ के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/15-17, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)

Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2015-17, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 13th May 2017